श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 180, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 29 जुलाई 2023

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

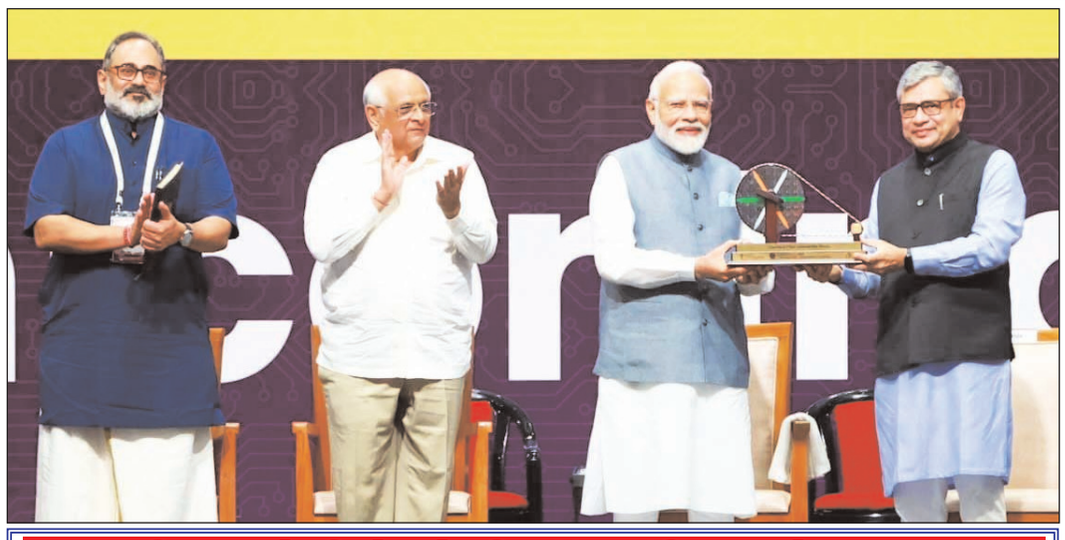

मैन्युफैक्चरिंग हब बना भारत: पीएम मोदी

पीएम मोदी ने 'सेमीकॉन इंडिया इवेंट' का इनॉगरेशन किया, पहले लोग सवाल पूछते थे, 'वाय इन्वेस्ट' अब 'वाय नॉट इन्वेस्ट' कहते हैं: मोदी

गांधीनगर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार (28 जुलाई) को गुजरात के गांधीनगर में सेमीकॉन इंडिया इवेंट का इनॉगरेशन किया। इससे पहले उन्होंने सेमीकॉन इंडिया एग्जीबिशन देखा। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और राजीव चंद्रशेखर सहित अन्य लोग मौजूद रहे। पीएम मोदी ने कहा, पिछले साल सेमीकॉन इंडिया के पहले एडिशन में सवाल पूछा जा रहा था 'वाय इन्वेस्ट'। अब सवाल बदल गया है। कहा जा रहा है 'वाय नॉट इन्वेस्ट'। पीएम ने कहा- आज ग्लोबल इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग में भारत का शेयर बढ़ चुका है।

2014 में भारत का प्रोडक्शन 3 बिलियन डॉलर यानी करीब 24 हजार करोड़ रुपए से कम था। आज ये 100 बिलियन डॉलर यानी करीब 8.2 लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया है। वहीं ग्लोबल सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरर अटऊ ने कहा कि वह 32 हजार करोड़ का निवेश करेगा।

माइक्रोन के निवेश से 15,000 नौकरियां पैदा होंगी: माइक्रोन के उएड संजय मेहरोत्रा ने कहा, 'भारत के सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में माइक्रोन का निवेश पहला बड़ा निवेश होगा। हमारा अनुमान है कि माइक्रोन की भारत की योजनाएं अगले कुछ सालों में 5000 डायरेक्ट नौकरियां और कम्यूनिटी के अंदर 15,000 नौकरियां पैदा करेंगी।

ताइवान भारत का सबसे विश्वसनीय भागीदार: फॉक्सकॉन के चेयरमैन यंग लियू ने कहा- दुनिया में बनने वाले 10 हाईटेक उपकरणों में से चार फॉक्सकॉन में बनते हैं। फॉक्सकॉन के पास सेमीकंडक्टर क्षेत्र में उपकरण, पैकेजिंग, डिजाइन सर्विस और डिजाइन हाउस आदि का अनुभव है। उन्होंने ये भी कहा कि ताइवान भारत का सबसे विश्वसनीय भागीदार है और रहेगा।

भारत निवेशकों के लिए सबसे अच्छा ऑप्शन: वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने कहा,'भारत आज निवेशकों के लिए सबसे अच्छा ऑप्शन है। भारत में लैंड एक्यूजेशन बहुत आसान है। आपके लिए भारत में निवेश करना कभी भी गलत साबित नहीं होगा। भारत एंटरप्रेन्योर के लिए देश है।' वेंदांता गुजरात में जल्द ही सेमीकंडक्टर प्लांट लगाने वाला है।

32 हजार करोड़ रुपए निवेश करेगा: ग्लोबल सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्ररर ने अगले पांच सालों में भारत में लगभग 400 मिलियन डॉलर (करीब 32 हजार करोड़) का निवेश करने की अपनी योजना का ऐलान किया है। अटऊ ने कहा, यह निवेश भारत सरकार की सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री पर विभिन्न पॉलिसी का समर्थन है।'

तीन दिन चलेगा सेमीकॉन इंडिया इवेंट: सेमीकॉन इंडिया इवेंट आज से शुरू होकर 30 जुलाई तक चलेगा। फॉक्सकॉन चेयरमैन यंग लियू, माइक्रोन के चीफ एक्सिकिटिव ऑफिसर संजय मेहरोत्रा और एडवांस्ड माइक्रो डिवाइसेज के चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर मार्क पेपरमास्टर तीन दिन के इस इवेंट के वक्ताओं में शामिल हैं। इससे पहले 25 जुलाई को गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने आम लोगों के लिए सेमीकॉन इंडिया एग्जीबिशन ओपन किया। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर सहित अन्य लोग भी मौजूद रहे।

सफलताओं के बारे में बताने का अच्छा तरीका है सेमीकॉन इंडिया: केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा, 'मुझे बहुत खुशी है कि 'सेमीकॉन इंडिया' का दूसरा एडिशन गांधीनगर में हो रहा है। मैं बहुत खुश हूं, 15 महीने पहले जब पहला 'सेमीकॉन इंडिया' बेंगलुरु में लॉन्च किया गया था, तो ग्लोबल कंपनियों के बीच बहुत सारे सवाल थे - क्या भारत सफल होगा? क्या भारत फिर से विफल होगा? चूंकि भारत सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के क्षेत्र में पिछले 70 सालों में बार-बार विफल रहा है। गांधीनगर में दूसरा एडिशन उन जबरदस्त सफलताओं को बताने का एक अच्छा तरीका है जो हमें पिछले 15 महीनों में मिली हैं।'

जुलाई में सेमीकंडक्टर पॉलिसी अनाउंस हुई थी: जुलाई 2022 में गुजरात सरकार ने सेमीकंडक्टर पॉलिसी 2022-27 की अनाउंसमेंट की थी।

यूएस कंपनी एएमडी 40 करोड़ डॉलर का करेगी निवेश

गांधीनगर: सेमी कंडक्टर बनाने वाली अमेरिकी कंपनी एमएमडी ने भारत में अगले 5 साल में 40 करोड़ डॉलर (करीब 3290 करोड़ रुपये) निवेश करने की घोषणा की है। कंपनी यह निवेश अपने बेंगलुरु प्लांट में करेगी। साथ ही इसमें 3 हजार इंजीनियरों की भर्ती की जाएगी। कंपनी ने गांधीनगर के महात्मा मंदिर में आयोजित सेमीकॉन इंडिया-2023 कांफ्रेंस में यह जानकारी दी।

एएमडी के वाइस प्रेसिडेंट और चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर मार्क पेपरमास्टर ने बताया कि कंपनी भारत के बेंगलुरू में सबसे बड़ा रिसर्च एंड डवलपमेंट सेंटर खोलेगी। यह सेंटर इस साल के अंत तक खोल दिया जाएगा। पेपरमास्टर ने कहा कि पिछले कुछ साल में एएमडी ने भारत में बड़े पैमाने पर अपनी मौजूदगी बढ़ाई है।

सेमीकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग करने वाला गुजरात देश का पहला राज्य बनेगा: भूपेन्द्र

अहमदाबाद: गांधीनगर के महात्मा मंदिर में दूसरे सेमीकॉन इंडिया समिट 2023 के उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सफल प्रयासों के परिणामस्वरूप विश्व के इकोसिस्टम के साथ गुजरात बड़े पैमाने पर सेमीकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग करने वाला देश का पहला राज्य होगा। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर नीति 2022-27 लाने वाला गुजरात देश का पहला राज्य है। इस नीति के तहत गुजरात सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग का हब बन जाएगा। प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण भारत को सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक वैश्विक प्लेयर बनाना है।

सेमी कंडक्टर के क्षेत्र में भारत बनेगा पावरहाउस: अजीत मिनोचा

गांधीनगर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को गांधीनगर में महात्मा मंदिर में सेमीकॉन इंडिया 2023 का उद्घाटन किया। 'भारत के सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र का उत्प्रेरण' विषयक सम्मेलन भारत की सेमी कंडक्टर रणनीति और नीति को प्रदर्शित करता है, जो भारत को सेमी कंडक्टर डिजाइन, विनिर्माण और प्रौद्योगिकी विकास के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाने की परिकल्पना है। इस मौके पर उद्योग जगत के दिग्गजों ने विचार व्यक्त किये। सेमी के अध्यक्ष और सीईओ अजीत मिनोचा ने कहा कि भारत के इतिहास में पहली बार, भू-राजनीति, स्थानीय राजनीति और निजी गुप्त क्षमताएं भारत को सेमी कंडक्टर विनिर्माण में एक प्लेयर बनने के पक्ष में जुट गई हैं। उन्होंने कहा कि माइक्रोन द्वारा किया गया निवेश भारत में इतिहास बना रहा है जो दूसरों के अनुसरण के लिए मंच तैयार करेगा। सेमी कंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र को समझने वाला नेतृत्व मौजूदा प्रणाली को अलग बनाता है। भारत अगला पावर हाउस बन जाएगा। ईवीपी और सीटीओ एएमडी के मार्क पेपरमास्टर ने घोषणा की कि एएमडी अगले 5 वर्षों में लगभग 400 मिलियन डॉलर का निवेश करेगा। एएमडी अपनी अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं को बढ़ाएगा। उन्होंने कहा कि हम बेंगलुरु में अपना सबसे बड़ा डिजाइन सेंटर स्थापित करेंगे।

केंद्र से मिली मध्याह्न भोजन की राशि खर्च करने में विफल है बिहार सरकार : गिरिराज सिंह

बेगूसराय: केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह ने बिहार सरकार के एक-एक योजनाओं की पोल खोलने शुरू कर दी है।

शुक्रवार को उन्होंने बिहार सरकार पर स्कूलों में बच्चों को मध्याह्न भोजन खिलाने में असफल रहने का आरोप लगाया है। गिरिराज सिंह ने सोशल मीडिया पर कहा है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार सरकार मध्याह्न भोजन योजना के लिए आवंटित धन के एक महत्वपूर्ण हिस्से का उपयोग करने में विफल रही है।

संसद में गतिरोध जारी: विपक्ष अविश्वास प्रस्ताव पर तुरंत चर्चा के लिए अड़ा

लोकसभा में 'मणिपुर पर जवाब दो' के नारे लगे; राज्यसभा में सभापति-टीएमसी सांसद के बीच बहस

नई दिल्ली: लोकसभा और राज्यसभा में मणिपुर मुद्दे को लेकर गतिरोध जारी है। मानसून सत्र के सातवें दिन शुक्रवार को भी दोनों सदनों में जमकर हंगामा हुआ। लोकसभा में सुबह 11 बजे कार्यवाही शुरू होते ही नारेबाजी शुरू हो गई। विपक्ष के नेता अधीर रंजन चौधरी ने अविश्वास प्रस्ताव पर तुरंत चर्चा की मांग की। राज्यसभा में कार्यवाही 45 मिनट तक चली, लेकिन सभापति जगदीप धनखड़ और टीएमसई सांसद डेरेक ओब्रायन के बीच बहस के बाद इसे 31 जुलाई तक के लिए स्थगित कर दिया गया। उधर, राज्यसभा से निलंबित सांसद संजय सिंह ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया।

लोकसभा: मणिपुर हिंसा और प्रधानमंत्री मोदी के सदन में न होने पर नारेबाजी की: स्पीकर ओम बिरला ने विपक्ष से कार्यवाही में हिस्सा लेने को कहा। उन्होंने कहा, 'आप सदन को चलने नहीं देना चाहते, प्रश्नकाल, जहां सरकार सवालों का जवाब देती है, बहुत जरूरी है।' इस पर विपक्ष के नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि 10 मई 1978 को अविश्वास प्रस्ताव पेश होते ही उस पर बहस शुरू कर दी गई थी। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने चौधरी से कहा कि सब कुछ नियमानुसार हो रहा है। बहस 10 दिन के अंदर हो सकती है। हमारे पास नंबर हैं, अगर आपके पास हैं तो हमारे बिल को हराएं। हंगामा देख स्पीकर ने सदन को 12 बजे तक स्थगित कर दिया। इसके बाद 12 बजे फिर सदन शुरू हुआ। करीब आधा घंटे कामकाज होने के बाद कार्यवाही को सोमवार सुबह 11 बजे तक स्थगित कर दिया गया। विपक्ष ने सरकार हाय-हाय के नारे लगाए। मनरल्स (डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन) अमेंडमेंट बिल सदन से पास करा लिया।

भीमा कोरेगांव केस: 2 आरोपियों को 5 साल बाद जमानत

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने भीमा कोरेगांव केस में 28 जुलाई को दो आरोपियों वेरनन गोंजाल्वेस और अरुण फरेरा को जमानत दे दी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा- दोनों आरोपियों को कस्टडी में 5 साल हो चुके हैं। उन पर गंभीर आरोप हैं, लेकिन केवल इस आधार पर उन्हें जमानत देने से इनकार नहीं किया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस सुधांशु धूलिया की बेंच ने मामले की सुनवाई की।

5 साल से जेल में थे गोंजाल्वेस और फरेरा: गोंजाल्वेस और फरेरा को 2018 में मुंबई की तलोजा जेल भेजा गया था। बॉम्बे हाईकोर्ट से जमानत नामंजूर होने के बाद उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। दोनों ने कहा था कि हाईकोर्ट ने उनकी बेल एप्लीकेशन को खारिज कर दिया, जबकि सह-आरोपी सुधा भारद्वाज को जमानत दे दी।

● सुप्रीम कोर्ट की 5 शर्तें, कहा- मोबाइल स्विच्ड ऑफ नहीं होगा, लोकेशन ऑन रहेगी

सुप्रीम कोर्ट की 5 शर्तें

दोनों आरोपी महाराष्ट्र नहीं छोड़ सकते हैं। दोनों आरोपियों के पास एक-एक मोबाइल रहेगा। मोबाइल फोन कभी स्विच्ड ऑफ नहीं होगा। अपनी लोकेशन भी हमेशा ऑन रखेंगे। आरोपियों का फोन इस केस के इंचार्ज अफसर से पेयर रहेगा।

मामला: पुणे में एल्गर परिषद सभा 31 दिसंबर 2017 को हुई थी। पुलिस के मुताबिक, इसकी फंडिंग नक्सलियों ने की थी।

सेना प्रमुख ने लद्दाख के अग्रिम इलाकों का किया दौरा

लेह: सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने शुक्रवार को लद्दाख के अग्रिम इलाकों का दौरा किया। इस दौरान जनरल पांडे को ने सैनिकों से वार्ता की और सैन्य अधिकारियों ने उन्हें लद्दाख के अग्रिम इलाकों के दौरे के दौरान परिचालन तैयारियों के बारे में जानकारी दी गई। शुक्रवार को सेना ने एक ट्वीट के माध्यम से जानकारी दी कि सेना प्रमुख मनोज पांडे ने सैनिकों से बातचीत के दौरान उन्होंने उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए उनकी सराहना की और उन्हें अत्यधिक व्यावसायिकता और सकारात्मक भावना के साथ काम करना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उल्लेखनीय है कि भारत-चीन सीमा पर जारी तनाव के बीच सेना प्रमुख का यह दौरा हो रहा है। इससे पहले गुरुवार को जनरल पांडे ने सियाचिन ग्लेशियर के जमे हुए युद्ध क्षेत्र का दौरा किया और वहां परिचालन तैयारियों की समीक्षा भी की थी।

अरुणाचल के खिलाड़ियों को दिया था स्टेपल वीजा; विदेश मंत्रालय बोला- ये बर्दाश्त नहीं

भारत ने वापस बुलाए चीन जा रहे एथलीट

नई दिल्ली: भारत ने 26 जुलाई की रात वर्ल्ड युनिवर्सिटी गेम्स में हिस्सा लेने जा रहे अरुणाचल के एथलीट्स को एयरपोर्ट से ही वापस बुला लिया। इसकी वजह अरुणाचल के खिलाड़ियों के लिए चीन की तरफ से जारी किए गए स्टेपल वीजा बताई गई है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि वो चीन की ऐसी हरकतों को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेंगे। दरअसल, स्टेपल वीजा साधारण वीजा से अलग होते हैं। चीन अकसर स्टेपल वीजा उन लोगों के लिए जारी करता है, जिन्हें वो विवादित जगहों का नागरिक मानता है। चीन काफी समय से अरुणाचल को अपना हिस्सा बताता आ रहा है। जबकि भारत चीन के इस दावे का विरोध करता है।

रात में ही टीम वापस बुलाई: रिपोर्ट के मुताबिक वुशु गेम की 11 सदस्यीय भारतीय टीम चीन में वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स में शामिल होने के लिए देर रात रवाना होने वाली थी। कोच राघवेंद्र सिंह ने बताया- हमें इमिग्रेशन अधिकारियों और सुरक्षा के लिए तैनात सीआईएसफ ने बोर्डिंग गेट पर ही रोक दिया।

उन्होंने कोई कारण नहीं बताया और कहा कि वे केवल सरकार के निदेर्शों पर काम कर रहे थे। बाद में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा- हमारे ध्यान में आया है कि चीन ने एक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले हमारे कुछ नागरिकों को स्टेपल वीजा जारी किया गया था।

दूसरे दिन भी लखनऊ में सीएम योगी ने जनता दर्शन कर सुनीं 170 लोगों की समस्याएं

समस्याओं का समाधान न करने वाले अफसरों पर सीएम की नजर टेढ़ी

लखनऊ: मुख्यमंत्री आवास पर शुक्रवार को जनता दर्शन कार्यक्रम में 170 लोगों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलकर अपनी समस्याओं को उनके सामने रखा। इस दौरान मुख्यमंत्री एक-एक कर सभी से मिलने पहुंचे और समस्याओं को न सिर्फ सुना बल्कि आलाधिकारियों को उसके गुणवत्तापूर्ण और पारदर्शी निस्तारण के लिए निर्देशित किया।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए फरियादियों की समस्याएं सुनने के बाद डीजीपी और प्रमुख सचिव गृह को ऐसे जिलों की लिस्ट बनाने के लिए भी कहा जहां से लोग लगातार समस्याएं लेकर आ रहे हैं। उन्होंने थाना, ब्लॉक और तहसील स्तर पर सही ढंग से समस्याओं का निस्तारण न करने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय करते हुए लापरवाह अफसरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए भी आलाधिकारियों को निर्देशित किया। जनता दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री योगी ने फरियादियों को आश्वस्त किया कि किसी को भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। उनकी हर समस्या का समाधान निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से जल्द से जल्द कराया जाएगा। मुख्यमंत्री ने सभी प्रार्थना पत्रों को विषयानुसार प्रशासन व पुलिस के अफसरों को हस्तगत करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि हर परेशान व्यक्ति के साथ पूरी तरह संवेदनशील रवैया अपनाया जाए और जल्द से जल्द उनकी समस्याओं का समाधान कर उन्हें संतुष्ट किया जाए। इसमें किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जनता दर्शन में ज्यादार लोग गंभीर बीमारियों के इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर आए थे। उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इलाज संबंधी इस्टीमेट की प्रक्रिया पूर्ण करते हुए जल्द शासन को उपलब्ध कराया जाए।

सीएम धामी ने 94 मेधावी छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित

देहरादून: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को देहरादून के सर्वे चौक स्थित आईआरडीटी सभागार में आयोजित 10वीं एवं 12वीं परीक्षा में उत्तीर्ण मेधावी छात्र-छात्राओं के सम्मान समारोह में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान राज्य सरकार की ओर से 94 मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री धामी ने सभी मेधावियों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें गर्व का अनुभव हो रहा है। आज वे प्रदेश के उन सर्वश्रेष्ठ बच्चों से मिल रहे हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर यह दिखाया है कि शिखर पर जाने के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है। शिक्षा से जीवन की सभी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

खबर संक्षेप

लोकमंगल संस्थान में कजरी महोत्सव का आयोजन आज

करछना। अपनी माटी परिपाटी संस्कृति संस्कार एवं लोक परम्परा को संजों रहे क्षेत्र के रामपुर स्थित लोकमंगल संस्थान में आज कजरी महोत्सव का आयोजन किया गया है। संस्थान के सचिव चर्चित हास्य कवि अशोक बेशरम ने बताया कि जागृति मिशन के संयोजक डॉ भगवत पांडेय कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। अध्यक्षता लोकविद् रामलोचन सांवरिया और संचालन वरिष्ठ गीतकार राजेंद्र शुक्ल करेंगे। कार्यक्रम के दौरान आकाशवाणी दूरदर्शन से जुड़े जमुनापार के नए,पुराने लोक कलाकारों द्वारा प्रदेश में गाई जाने वाली कजरी के विविध रंगों की प्रस्तुति होगी। दोपहर बाद 2 बजे से आयोजित कार्यक्रम में कई साहित्यकार, कवि, कलाकार एवं गणमान्य भी मौजूद रहेंगे। उन्होंने लोकगीत प्रेमियों से कार्यक्रम में पहुंचकर आयोजन को गौरवान्वित करने की अपील की।

अतीक का बहनोई 10 लाख रंगदारी मांगने में गिरफ्तार, बेटे-पत्नी समेत कुल सात लोग किए नामजद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पूरामुफ्ती में अतीक अहमद के बहनोई मो. अहमद को 10 लाख रंगदारी मांगने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। जाफरी कॉलोनी निवासी साबिर ने अहमद, उसके बेटे व पत्नी समेत सात लोगों पर नामजद मुकदमा लिखाया है। साबिर हुसैन निवासी 60 फीट रोड जाफरी कॉलोनी प्लॉटिंग का काम करता है।उसने पुलिस को बताया कि छह जुलाई को वह एक प्लॉट दिखाने 120 फीट रोड कालिंदीकुंज गेस्ट हाउस के पीछे दोपहर में पहुचा था। तभी अतीक का भांजा जका, मो. वैश व मुजम्मिल, शकील आए और गालीगलौज करते हुए प्लॉट से भागने को कहा। वीडियो बनाने पर मोबाइल छीनकर कहा कि इस इलाके में कोई प्लॉटिंग का काम करेगा तो 10 लाख रुपये देना पड़ेगा।15 जुलाई को मोबाइल लेने वह जका के मरियाडीह रोड स्थित घर पर गया तो वहां जका, उसके वालिद मो. अहमद व माता बाहर निकली। घटना के बारे में बता ही रहा था कि तभी जका ने मो. वैश व राशिद उर्फ नीलू को बुला लिया। फिर एक राय होकर उस पर सभी ने हमला कर दिया। 10 लाख रुपये रंगदारी भी मांगी। हाथ जोड़ने पर किसी तरह 10 दिन का वक्त देकर छोड़ा। पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष उपेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि आरोपी मो. अहमद को गिरफ्तार कर लिया गया है। वह अतीक का बहनोई है। उसके बेटे, पत्नी समेत अन्य छह आरोपियों की तलाश की जा रही है।

उमेश पाल हत्याकांड के आरोपी का ससुर है आरोपी

गिरफ्तार मो. अहमद अतीक के बहनोई होने के साथ ही प्रॉपर्टी डीलर खालिद जफर का ससुर भी है। गौरतलब है कि खालिद जफर को भी पुलिस ने उमेश पाल हत्याकांड में आरोपी बनाया है। आरोप है कि उसने शाइस्ता परवीन व उसके बेटों की लगातार आर्थिक मदद की। उसे गाड़ी भी मुहैया कराई थी।

तीन महीने पहले भी दर्ज करा चुका है मुकदमा

अतीक के बहनोई को जिस मुकदमे में गिरफ्तार किया गया, उसका वादी साबिर तीन महीने पहले भी धूमनगंज में अतीक अहमद, उसके बेटे अली समेत 13 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसका आरोप था कि चकिया स्थित उसके घर पर आकर अतीक के कहने पर आरोपियों ने उससे एक करोड़ रुपये रंगदारी मांगी। इसी मामले में अतीक का गुर्गा असाद कालिया गिरफ्तार किया गया था।

सात माह के बच्चे के पेट से निकाला डॉक्टरों ने बच्चा 4 घंटे तक चला ऑपरेशन

प्रयागराज। सात माह के बच्चे के पेट में पल रहे बच्चे (भ्रूण) को चिल्ड्रेन अस्पताल के चिकित्सकों ने बाहर निकालने में सफलता पाई है। करीब चार घंटे तक चले ऑपरेशन के बाद बच्चे के पेट से करीब दो किलो का भ्रूण बाहर निकाला गया। बच्चा भी पूरी तरह से सुरक्षित है। फिलहाल उसे अस्पताल के पीकू वार्ड में रखा गया है। डॉक्टरों के मुताबिक मां के गर्भ में पल रहे भ्रूण के भीतर दूसरा भ्रूण तैयार होने से ऐसे मामले अपवाद स्वरूप सामने आते हैं चिकित्सा विज्ञान में इस स्थिति को "फीटस इन फीटू" कहा जाता है। यह बच्चा प्रतापगढ़ जिले के कुंडा में रहने वाले संदीप शुक्ला का है। उनके एक संतान पहले से है। करीब सात महीने पहले पत्नी ने दूसरे बेटे को जन्म दिया, लेकिन उसी दौरान उनका देहांत हो गया। छोटे बच्चे मनु का जन्म से ही पेट फूला हुआ था। इसे लेकर संदीप ने पहले कुंडा के डॉक्टरों को दिखाया। कोई राहत नहीं होने पर लखनऊ में कुछ डॉक्टरों को दिखाया।
बकौल संदीप, पत्नी के दिवंगत होने के बाद दोनों बच्चों को संभालते हुए बमुश्किल गुजारा हो रहा है। इसी कारण लखनऊ के डॉक्टरों ने कई तरह की जांच लिख दीं, जिसे वह नहीं करा पाए। बच्चे का पेट भी दिनों-दिन फूलने लगा। सात महीने का होने पर बच्चे को सांस लेने में दिक्कत आने लगी। वह कुछ खा-पी भी नहीं रहा था, इसलिए उसका वजन भी लगातार घटने लगा। संदीप उसे दिखाने लखनऊ स्थित पीजीआई गए, लेकिन पैसे के अभाव में जांच फिर नहीं करा सके। इलाज भी शुरू नहीं हो सका।

न्यूज झरोखा

मिशन शक्ति के तहत विद्यालय मे छात्राओं को चौकी प्रभारी ने किया जागरूक

छात्राओ और बच्चो को सुरक्षा हेल्पलाईन की मदद लेने को किया जागरूक

जारी। मिशन शक्ति के तहत छात्राओं के शुक्रवार को जागरूकता व बचाव के उपयो पर विद्यालय में अभियान के तहत जवाहरलाल नेहरू स्मारक इंटर कॉलेज जारी मे एक कार्यक्रम आयोजित जारी चौकी प्रभारी शैलेंद्र यादव ने जागरूक किया । उन्होने बच्चो को जागरूक करते हुए पुलिस एवं प्रशासनिक मदद के उपायो पर जोर देकर कहा अब आपको जागरुक होना होगा।अब आप कमजोर नही,आज की बच्चिया महिलाए चारो तरफ जल-थल-नभ मे अपना परचम लहरा रही है। सरकारे और प्रशासन आपके सुरक्षा और विकास के प्रति समर्पित है। आपको अपनी सुरक्षा के लिए समाज व घर के दवाव मे डरने की जरूरत नही है। चाहे विद्यालय का आवागमन हो या घरेलू हिंसा सभी के प्रति जागरुक होना होगा। किसी बात पर माता-पिता के साथ ऐसी किसी प्रकार की दिक्कत होने पर 1090 ,112 आदि हेल्प नम्बरो पर अवगत कराकर पुलिस एवं प्रशासन की मदद लेनी चाहिए। वह पूरी तरह गोपनीय रहेगी। ताकि गलत करने वाले या छेडखानी करने वालो का मनोबढ ना बढे। इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका सविता मिश्रा, योगेंद्र सिंह ,संतोष सोनी, रामधनी सिंह, अजय सिंह, सज्जन सिंह ,शैलेंद्र सिंह ,अन्य शिक्षक उपस्थित रहे।

किसानों की समस्या को लेकर योगेश ने सीएम व डिप्टी सीएम को भेजा पत्र

मेजा। भाजपा के वरिष्ठ नेता योगेश शुक्ल ने प्रयागराज जनपद में इस वर्ष मानसून काल की वर्षा ठीक से न होने के कारण यमुनापार क्षेत्र के तहसील मेजा , कोरांव, करछना और बारा में किसानों को सूखे जैसी स्थिति का सामना कर रहे किसानों की समस्या को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को पत्र भेजकर एवं जिलाधिकारी प्रयागराज से उनके प्रतिनिधि विनय कुमार ने मिलकर पत्र के माध्यम से किसान बंधु के समस्या के निदान हेतु सुझाव देते हुए निवेदन किया है।उन्होंने पत्र में लिखा है कि उक्त तहसीलों में जितने भी नहर प्रखंड और जितने भी माइनर है उन्हें तत्काल प्रभाव से खुलवाया जाना बहुत जरूरी है । इस भयंकर समस्या से किसान बंधुओं को बाहर निकालने के लिए समय रहते उन्हें निजी ट्यूबल से सिंचाई हेतु अबाधित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित हो सके । बंद पड़े सरकारी ट्यूबवेल पूरी क्षमता से तत्काल चलाये जायें ।श्री शुक्ल ने पत्र के माध्यम से मांग किया है कि यदि ऐसा न हो सका तो किसानों की जुताई और बोआई भी बेकार चली जाएगी ।श्री शुक्ल ने जनपद प्रयागराज के किसानों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि हमारी सरकार किसानों के साथ पूरी तत्परता से खड़ी है। किसान बंधु को निराश होने नहीं दिया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार किसान बंधु के समस्या पर हर स्तर पर साथ है।

शिविर लगाकर नेत्र परीक्षण व परामर्श के साथ दी गई दवाएं

सहसों। अमर मेमोरियल हॉस्पिटल सहसों में शिविर के माध्यम से वरिष्ठ नेत्र सर्जन डॉ वी के सिंह ने नेत्र परीक्षण के दौरान लोगों से आंख में लालिमा देखने पर तत्काल किसी नेत्र विशेषज्ञ से मिलकर सावधानी बरतने की सलाह दी। उन्होंने कहा संक्रमण के कारण शुरूआती दौर में एक आंख लाल होती है। धीरे-धीरे संक्रमण फैलने के कारण दूसरी आंख भी लाल हो जाती है। यह लक्षण यदि दिखाई दे तो कंजेक्टिवाइटिस रोग ही है। उन्होंने लोगों को सलाह देते हुए कहा कि यदि आंख लाल हो जाए, आंख में सूजन हो, गड़ने लगे, आंख में कीचड़ आए तो तत्काल चिकित्सीय परामर्श लेते हुए संक्रमण से बचाव के हेतु चश्मे का प्रयोग, भीड़भाड़ से दूर रहते हुए स्वच्छता अपनाएं तथा पानी से आंख को धो कर स्वच्छ रुमाल से साफ किया जा सकता है। आंख लाल होने पर हाथ या फिर रुमाल से कतई रगड़ने की भूल न करें केवल शुद्ध काटन से सफाई की जा सकती है। इस अवसर पर क्षेत्र से आए हुए एक सौ साठ मरीजों में से सौ से अधिक मरीज कंजेक्टिवाइटिस रोग के ही पाए गए। जिनका चिकित्सीय परीक्षण कर उचित परामर्श देते हुए दवाएं दी गई।

चकभटाई वार्ड को आदर्श वार्ड मॉडल चुने जाने पर हुई बैठक

वार्ड की पहली प्राथमिकता है साफ-सफाई रहे : पार्षद मयंक यादव

नैनी। नैनी चकभटाई वार्ड को आदर्श वार्ड मॉडल वार्ड चुने जाने पर एक वार्ड की निगरानी समिति की एक बैठक आहूत की गई। जिसमें वार्ड की स्वच्छता,डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन गली नाली के निर्माणकार्य लाइट सुंदरीकरण के संबंध में निगरानी समिति के सदस्यों से सुझाव लिए गए।जिसमें मुख्य रूप से जोनल अधिकारी,सफाई इंस्पेक्टर,जोन चीफ, अवर अभियंता निर्माण, समिति के भगवती पाण्डेय, देवेंद्र तिवारी, अजय श्रीवास्तव, नन्दू भाई आजाद संतोष यादव, विद्या सिंह, संगीता सिंह, सुरेश पटेल, सुनील कुशवाहा, सुधीर प्रजापति, राजकुमार

एक पखवारे से दर्जनों चोरियों में एक का भी नहीं हुआ खुलासा

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा क्षेत्र एक पखवारे से चोरी का सिलसिला थमने का नाम नही ले रहा है।प्रतिदिन हो रही चोरी की घटना से दहशत का माहौल है। बीती रात एक विद्यालय का ताला तोड़कर चोरों ने हजारों का सामान चोरी कर ले गए। प्रधानाध्यापक ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मऊआइमा थाने में तहरीर दी है। एक अन्य स्थान पर भी हजारों की चोरी के मामले में तहरीर दी गई।क्षेत्र में हुई अनगिनत चोरियों का पुलिस आज तक खुलासा नही कर सकी है।जिस की वजह से क्षेत्र में दहशत का माहौल है। मऊआइमा क्षेत्र में इन दिनों चोरों के हौसले पूरी तरह बुलंद है। कोई ऐसा दिन नहीं गुजरता जिस दिन चोरी की घटना न होती हो। बताया गया है कि बीती रात चोरों ने बांकाजलालपुर स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय का चैनल गेट कक्षों, स्टोर रूम का ताला तोड़कर एक सिलेंडर, साउंड सिस्टम, एक पेटी टाइल्स, तेल, मसाला, आटा, चावल आदि हजारों रुपए की चोरी करने में सफल रहे। मंगलवार को सुबह जब स्कूल खुला तो चोरी की घटना के बाबत पता चला। प्रधानाध्यापक चिन्तामणि त्रिपाठी ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर दी है। प्रधानाध्यापक ने बताया कि इसके पूर्व कई बार विद्यालय में चोरी हो चुकी है। बीती रात छपाई बाग निवासी मोहम्मद अय्यूब पुत्र जन्ना चार लोहे का फरमा एक दर्जन चूल्हे वाला लोहे का स्टैंड चोर चोरी कर ले गए। इसी प्रकार सोमवार की रात्रि में दुगार्गंज ऊंचडीह निवासी विजय कुमार के यहां सोना, चांदी के जेवरातों एंव नगदी सहित लाखों की चोरी हुई। ग्राम बागी निवासी हीरालाल की बाइक ब्लाक बीज भंडार के पास से चोरी हो गई। मऊआइमा कस्बा के आजमपुर निवासनीय अफसाना बानों के घर की बाउंड्री फांदकर चोर तीन कीमती मोबाइल चोरी कर ले गए। नेशनल हाईवे पर स्थित सरपताही नहर पर बाइक के शो रूम के पुर्जे वाले कमरे का ताला तोड़कर कर चोर हजारों रुपए की चोरी करने में कामयाब रहे। भुक्तभोगी श्याममूर्ति मौर्या ने अज्ञात में मुकदमा दर्ज करा दिया है। इसी क्रम में सकरामऊ निवासी मंगेश पटेल ने कंचनपुर नेशनल हाईवे पर कपडे की दुकान पर चोरों ने पचास हजार रुपये के जींश, टीशर्ट आदि चोरी करने का मुकदमा दर्ज कराया है। इसी प्रकार ग्राम जोगीपुर बेलखरिया के पूरा निवासीविजय कुमार पाल के घर की कुंडी काट कर चोरों सोने, चांदी के जेवरात 18 हजार नगदी चोरी का मुकदमा दर्ज कराया है। दर्जभर से अधिक चोरी की वारदातें हो चुकी है। परन्तु पुलिस आज तक एक भी चोरी की घटना का खुलासा नहीं की है।

चोरों ने फिर एक विद्यालय में मिड डे मिल सहित हजारो का उड़ाया

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके में चोरो के हौसले पूरी तरह बुलंद है। कोई ऐसा दिन नही गुजर रहा है जिस दिन चोरी की घटना न हुई हो ।बीती रात चोरों ने एक प्राथमिक विद्यालय का ताला तोड़कर हजारों का मिड डे मिल का सामान चोरी कर ले गए। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय बादशाह कुली में स्थित प्राथमिक विद्यालय में बीती रात चोरों ने विद्यालय का ताला तोड कर मिड डे मिल का रखा ,गेहूं, चावल, तेल, रसोई गैस सिलेंडर, मसाला आदि हजारों के समान चोर चोरी कर ले गए। सुबह ग्राम प्रधान सफी उल्ला और प्राधानाध्यापक सन्त लाल ने डायल 112 नम्बर को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंच कर जायजा ली। ग्राम प्रधान सफी उल्ला, प्राधानाध्यापक सन्त लाल मौर्या ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मऊआइमा थाने में तहरीर दी है। गत दिनों ग्राम बांकाजलालपुर में स्थित प्राथमिक विधालय में भी हजारों का मिड डे मील का सामान चोर चोरी कर ले गए। इसी तरह छोटे बडे दर्जनों चोरी की घटनाएं हो चुकी है। लगातार चोरी की घटना से क्षेत्र में लोगो के प्रति दहशर का माहौल व्याप्त है।

चकसुचेर पंचायत भवन का ताला तोड़ चोरों ने उड़ाए उपकरण

इसके पूर्व दूसरी जगह पंचायत भवन में चोरी का अब तक नहीं हुआ खुलासा

लालापुर। लालापुर थाना क्षेत्र के चकसुचेर पंचायत भवन का ताला तोड़ घुसे चोरों कम्प्यूटर समेत हजारों कीमत के कई उपकरण उठा ले गए । चोरी की शिकायत प्रधान ने लालापुर पुलिस से की है। लालापुर के चकसुचेर ग्राम सभा के पंचायत भवन का ताला तोड़ गुरुवार की रात घुसे चोरों ने अंदर से इन्वर्टर की दो बैटरी ,कंप्यूटर और चार पंखे खोलकर उठा ले गए । शुक्रवार की सुबह जब ग्रामीण पंचायत भवन की ओर गए तो ताला टूटा देखे । ग्रामीणों ने चोरी की सूचना ग्राम प्रधान को दी तो ग्राम प्रधान मौके पर पहुंच देखा तो उपरोक्त उपकरण गायब थे । ग्राम प्रधान ने चोरी की लिखित शिकायत लालापुर पुलिस से की तो मौके पर पहुंच पुलिस ने जांच पड़ताल की । दूसरी जगह लालापुर पंचायत भवन में लगभग 6 माह पहले चोरी हुई थी जिसका आज तक खुलासा नहीं हो पाया है।नये थाना अध्यक्ष कमान सभाले है देखना है की खुलासा होगा की पुराने ठन्डे बास्ते की तरह पड़ा रहेगा।

ग्राम प्रधानों के प्रदत्त अधिकारों का हनन बर्दाश्त नहीं होगा : रामसेवक यादव

अखंड भारत संदेश

ब्लॉक मुख्यालय पर प्रधानों ने बैठक कर बनाई रणनीति

कोरांव। अफसरशाही व ग्राम पंचायत अधिनियम में प्रधानों को प्रदत्त अधिकारों के हनन के विरोध में अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन की एक बैठक ब्लाक मुख्यालय कोरांव पर शुक्रवार को संपन्न हुई। बैठक में अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामसेवक यादव ने कहा कि प्रजातांत्रिक भारत देश संविधान के अनुसार पंचायती राज अधिनियम के अंतर्गत गांव के विकास हेतु संविधान की ग्यारहवीं अनुसूची के अनुच्छेद 243 (छ) के तहत 29 विभागों के संचालन का अधिकार ग्राम पंचायत को दिया गया है। जिसके मुखिया ग्राम प्रधान होते हैं। लेकिन उनके अधिकारों का लगातार शोषण व हनन हो रहा है जिसके विरोध में प्रधान ने बैठक कर आवाज बुलंद की। ग्राम प्रधान संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी ने उपस्थित प्रधानों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधान खुद अपनी ताकत को पहचाने और पंचायती राज एक्ट में दिए गए प्रावधानों के तहत अपने अधिकारों का प्रयोग करें निश्चित तौर पर अफसरशाही घुटने टेक लेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानों का शोषण कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ग्राम प्रधान संगठन महिला मंच के प्रदेश अध्यक्ष नीलम पथिक ने प्रधानों का आह्वान करते हुए कहा कि सभी ग्राम प्रधान अपनी शक्ति को पहचाने और ब्लॉकों में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करें अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन प्रधान हित के लिए सदैव तत्पर रहेगा। इसी प्रकार ग्राम प्रधान संगठन के मंडल अध्यक्ष कमल मिश्रा ने प्रधानों के साथ हो रहे अन्याय व शोषण के विरोध में प्रदेश सरकार तक प्रधानों की आवाज पहुंचाने के लिए आश्वस्त किया। इसी तरह प्रयागराज मंडल के मंडल महामंत्री अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने संबोधित करते हुए कहा कि अफसरशाही इस तरह हावी है कि ग्राम प्रधान चाहे तहसील ब्लाक अथवा थाने पर कोई भी शिकायत करते हैं प्रधानों का कोई भी अधिकारी सहयोग नहीं करता। जिससे गांव समाज की जमीनों से अवैध कब्जे आदि नहीं हटाए जा रहे हैं। प्रधान उल्दा दिलीप सोनी के प्रकरण को लेकर प्रधानों का प्रतिनिधिमंडल थाने पहुंचा और मामले का निस्तारण कराया। बैठक में उपस्थित रहे सहायक विकास अधिकारी पंचायत दिनेश चंद्र पाठक ने प्रधानों का सहयोग करने का आश्वासन दिया। इसी प्रकार प्रदेश संगठन मंत्री दिलीप सोनी, कंचन मिश्र, वेद प्रकाश सिंह, ज्ञान सिंह, शंकर दयाल तिवारी, मोहम्मद सद्दाम, मोहम्मद यूसुफ, मुरारीलाल मौर्य, मुख्तार अहमद, नीरज भुर्तिया भगवती243 कोल, सुनीता देवी समेत कई पदाधिकारियों व प्रधानों ने संबोधित किया। ग्राम ग्राम प्रधान संगठन के बैठक की अध्यक्षता ग्राम प्रधान रमाकांत सिंह तथा संचालन ब्लॉक अध्यक्ष रामानुज यादव ने किया। बैठक में बीडीओ कोराव धीरेंद्र कुमार यादव,एडीओ डीसी पाठक में भी प्रधानों को यथोचित सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

परिजनों ने विधवा व उस की पुत्री को मारा पीटा मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके में एक विधवा को उसी के परिजनों ने जीना हराम कर दिया हैं। विधवा और उसकी पुत्री को मार पीट कर जख्मी कर दिए।मडहा एवं चरही तोड डाले। विधवा ने थाने में तहरीर दे कर तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के विशम्भरपुर गांव निवासनीय विधवा उर्मिला पाल पत्नी स्वर्गीय चन्द्र केश पाल का कहना है कि पति के देहशांत के बाद जेठ उसके पुत्रों द्वारा उसे घर पर सकून से रहने नहीं दिया जा रहा है। आरोप है कि उसके जेठ व उसके पुत्रों ने उसकी चरही, मडहा, खूटा आदि उखाड़ कर फेंक दिए। बोलने पर उसे और उसकी गर्भवती पुत्री किरन को मार पीट कर जख्मी कर दिए। विधवा उर्मिला पाल ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर अपने जेठ सन्त राम, जेठ के पुत्र संदीप कुमार, सतीश कुमार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

मुबारकपुर कम्पोजिट विद्यालय में शिक्षा चौपाल का आयोजन

नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में बीए, बीएससी, एमए प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश जारी एवं कक्षाएं प्रारंभ

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में नव प्रवेशी छात्र छात्राओं की कक्षाएं संचालित की जा रही हैं।इसी के साथ बीए, बीएससी, एमए प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश अनवरत जारी है प्राचार्य प्रो0 राजीव मालवीय ने बताया कि हमारे महाविद्यालय से उत्तीर्ण हुए छात्र छात्राएं अपनी योग्यता, बल, पौरुष, प्रतिभा से देश प्रदेश में उच्च पदों को सुशोभित कर रहे हैं क्योंकि हमारे महाविद्यालय में योग्य शिक्षकों द्वारा शत प्रतिशत कक्षाएं संचालित की जाती हैं नकल विहीन परीक्षा का आयोजन होता है और लगभग शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम भी आता है। प्राइवेट कालेज से नकल करके लोग अंकपत्र तो पा जाते हैं लेकिन ज्ञान प्रतिभा से वंचित रह जाते हैं जिसके कारण ऐसे छात्र छात्राएं किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफल नहीं हो पाते। ज्ञानार्जन करके अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से इंसान हर क्षेत्र में उच्च पदों को सुशोभित करता है। इसलिए बीए, बीएससी, एमए प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने हेतु छात्र, छात्राएं महाविद्यालय कार्यालय से कालेज विवरणिका प्रवेश फार्म लेकर महाविद्यालय प्रवेश समिति के समक्ष अंक पत्रों की मूल एवं छायाप्रति, आधार कार्ड तथा फोटो के साथ उपस्थित होकर अपना प्रवेश सुनिश्चित करवा लें ताकि समय से छात्रवृत्ति योजना का लाभ भी बच्चों को शत प्रतिशत प्राप्त हो सके।

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुसार आज संविलियन विद्यालय मुबारकपुर में शिक्षा का चौपाल आयोजित किया गया जिसमें खंड शिक्षा अधिकारी फूलपुर विश्वनाथ प्रजापति ने कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्वलन के द्वारा की अभिभावकों को संबोधित करते हुए उन्होंने डीबीटी के तहत भेजी गई बारह सौ रुपए की धनराशि का बच्चों के लिए उपभोग किये जाने की बात कही उन्होंने कहा की यह धनराशि बच्चों के लिए ही यूनिफॉर्म,जूता मोजा,विंटर यूनिफॉर्म एवं स्कूल बैग के लिए ही खर्च की जानी चाहिए अन्यथा बच्चों को स्कूल में हीनता की भावना आती है ऐसे में शासन की मंशा के अनुसार बच्चों को ड्रेस में स्कूल आना चाहिए साथ ही अबकी बार सौ रुपये की धनराशि बच्चों के कॉपी और पेन के लिए भेजी गई है अतः समस्त अभिभावकों को इस धनराशि द्वारा बच्चों को कापियां लेनी चाहिए तदुपरांत ए आर पी परमानंद कुशवाहा ने दीक्षा एप के तहत बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए इस पर अभिभावकों को जागरूक किया। ए आर पी पांडे वेद मित्रं ने बच्चों को कैसे निपुण बनाया जाए इस पर मार्गदर्शन दिया। एआरपी रमेश गुप्ता ने बच्चों को कैसे दक्ष बनाया जाए इस पर चर्चा किए। एआरपी कृष्ण विभूति ने रीड अलांग एप को कैसे इस्तेमाल किया जाए इस पर अभिभावकों को जागरूक किया इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक नीरज सिंह ने उपस्थित अभिभावकों को बच्चों को नियमित स्कूल भेजने के आग्रह किए। ग्राम प्रधान मुबारकपुर श्रीमती रीता देवी ने अभिभावकों को कायाकल्प के तहत दी गई व्यवस्थाओं के बारे में बताया। एसएमसी अध्यक्ष राम पूजन में एसएमसी की नियमित बैठक के बारे में चर्चा की कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त करते हुए ग्राम प्रधान मुबारकपुर ने आने वाले समय में विद्यालय को कायाकल्प से परिपूर्ण करने का वादा किया इस अवसर पर विद्यालय के समस्त स्टाफ अवधेश त्रिपाठी, रश्मि शर्मा, मंजू देवी, संगीता, अभिषेक मिश्रा, आशा देवी उपस्थित रहे अभिभावकों में ओम प्रकाश, सत्य प्रकाश, राकेश,आशीष,संदीप, गुलाब, सुनीता, अनीता, आदि उपस्थित रहे।

शिक्षा चौपाल लगाकर बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए की गई पहल

मेजा। गुरुवार को निपुण भारत मिशन के तहत ब्लॉक संसाधन केंद्र मेजा के डीही खुर्द के पूर्व माध्यमिक संविलियन विद्यालय में शिक्षा चौपाल लगाकर परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया।कार्यक्रम बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी के मार्गदर्शन व नवागत खंड शिक्षा अधिकारी कैलाश सिंह की अगुवाई तथा नोडल एआरपी गिरीश तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित की गई।उन्होंने अपने संबोधन में बच्चों एवं अभिभावकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।उन्होंने अभिभावकों को बच्चों के साथ समय बिताने, शैक्षणिक गृह कार्य पूर्ण कराने एवं बच्चों को लिखित कार्य के माध्यम से अभ्यास कराने पर चर्चा किया। दीक्षा ऐप डाउनलोड करने एवं पाठ्यपुस्तकों में दिये गये क्यूआर कोड को मोबाइल सेस्कैन करके बच्चों को पढ़ने के लिये प्रेरित किया। यदि बच्चा किसी अधिगम स्तर को नहीं प्राप्त कर सका है तो शिक्षकों से सम्पर्क करके उस अधिगम स्तर को प्राप्त करने के लिये बच्चों को प्रेरित किया। नोडल ए आर पी गिरीश कुमार तिवारी ने शिक्षा चौपाल में उदाहरण देते हुए बुनियादी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। उनके द्वारा बताया गया कि जिस प्रकार एरोप्लेन उड़ने के लिए रनवे की जरूरत होती है। रनवे पर दौड़ने से पर्याप्त गति मिलने पर उड़ान भर लेता है। उसी प्रकार बुनियादी शिक्षा अर्थात कक्षा 3 तक के बच्चे समझ के साथ पढ़ना लिखना आदि दक्षता में प्राप्त कर लेंगे तो आगे की उड़ान भर लेंगे। अतःबुनियादी शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।और यह तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शिक्षक और अभिभावक मिलकर लक्ष्य प्राप्ति में अपना दायित्व का निर्वहन करेंगे।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ।इस मौके पर एआरपी डॉक्टर गोपाल कृष्ण यादव, पुष्पराज सिंह, कमलाकांत पांडे तथा शिक्षक सत्यम ,प्रवीण, उपमा मैडम, सत्य प्रकाश, रीता मिश्रा और पूर्व प्रधान विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष अभिभावक गण मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

सुप्रसिद्ध बूढ़े नाथ धाम में रुद्राभिषेक आज

मेजा। क्षेत्र के प्रयागपुर मछहा बांध के समीप स्थित अति प्राचीन सुप्रसिद्ध बाबा बूढ़े नाथ मंदिर पर 29 जुलाई को रुद्राभिषेक एंव शिवपूजा कार्यक्रम आयोजित किया गया है उक्त आशय की जानकारी दिघिया गांव निवासी भगवान भोले नाथ के परम भक्त जय शंकर शुक्ल ने दिया श्री शुक्ल ने बताया कि शनिवार को सुबह 8 बजे सर्व प्रथम भगवान भोले नाथ का रुद्राभिषेक किया जायेगा और सायं 5 बजे मशहूर अस्सी घाट वाराणसी में गंगा एंव शिवार्थी काशी के प्रसिद्ध ब्राह्मणों द्वारा किया जायेगा तत पश्चात महा प्रसाद वितरण होगा।

बदलते मौसम से बढ़ रहा आई फ्लू संक्रमण का खतरा

मेजा। मेजा क्षेत्र में बदलते मौसम के कारण आई फ्लू का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेजा के नेत्र परीक्षण अधिकारी डॉक्टर आलोक कुमार मिश्रा से वार्ता करने पर उन्होंने बताया कि आई फ्लू का संक्रमण बहुत ही तेजी से बढ़ रहा है और आई फ्लू से संक्रमित मरीजों की संख्या एक दिन में लगभग 30 से 40 मरीज आ रहे हैं। आई फ्लू के मरीजों से बचने के लिए आंख से आंख ना मिलाये। धूप में जाने से बचे। चश्मे का उपयोग करें व गुनगुने पानी से आंख को धुले साफ कपड़े का उपयोग करें।

स्वास्थ्य सम्बंधी योजनाओं के क्रियान्वयन में कोई लापरवाही या उदासीनता न बरते : डीएम

अखंड भारत संदेश

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को संगम सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने जेएसवाई, मंत्रा पोर्टल पर प्रसव की इंट्री, ई-कवच एप, प्रधानमंत्री मातृत्व अभियान योजना, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, परिवार कल्याण कार्यक्रम, नियमित टीकाकरण, आरसीएच पोर्टल पर पंजीकरण एवं अपडेशन के कार्यों सहित स्वास्थ्य विभाग से सम्बंधित अन्य योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में जिलाधिकारी ने कार्यों में लापरवाही एवं उदासीनता पाये जाने पर बहरिया के प्रभारी चिकित्साधिकारी का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है। बैठक में बताया गया कि 07 अगस्त से 12 अगस्त तक चलने वाले मिशन इन्द्रधनुष कार्यक्रम के तहत 0 से 05 वर्ष के ऐसे बच्चों जिनको कोई टीका न लगा हो या किसी टीके से छूट गये हो, ऐसे बच्चों का टीकाकरण किया जायेगा। यह भी बताया गया कि इस अभियान में गर्भवती महिलाओं का भी टीकाकरण किया जायेगा। सितम्बर एवं अक्टूबर माह में भी इसी तरह से 06 दिन का मिशन इन्द्रधनुष कार्यक्रम के तहत टीकाकरण किया जायेगा। जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा है कि मिशन इन्द्रधनुष अभियान कार्यक्रम के तहत कोई भी बच्चा या गर्भवती महिला टीकाकरण से वंचित न रहने पायें। जिलाधिकारी ने कहा कि सर्वे का कार्य ठीक ढंग से करते हुए ड्यू लिस्ट अच्छे ढंग से बना ली जाये। हाईरिस्क एरिया में विशेष रूप से कार्य किए जाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने एनीमिया से पीड़ित महिलाओं का चिन्हीकरण करते हुए उन्हें आयरन एवं फोलिक की गोलियां अनिवार्य रूप से वितरित किए जाने के लिए कहा है। प्रसव मत्यु की आडिट अनिवार्य रूप से कराये जाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने आशाओं एवं जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थियों का शत-प्रतिशत भुगतान सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने मंत्रा एप, ई-कवच, आरसीएच पोर्टलों पर फीडिंग का कार्य शत-प्रतिशत रूप से कराये जाने हेतु निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने वेल्नेससेंटर के निर्माण कार्य में तेजी लाये का निर्देश दिया है। उन्होंने सभी चिकित्साधिकारियों को चिकित्सालयों में सभी आवश्यक व्यवस्थायें पूर्ण रूप से सुनिश्चित बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने चिकित्सकीय उपकरणों को चेक करते हुए खराब उपकरणों को ठीक कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने अस्पतालों में साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था बनाये रखने के साथ-साथ चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल स्टॉफ को मरीजों से अच्छा व्यवहार किए जाने के लिए कहा है। संस्थागत प्रसव की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने शत-प्रतिशत संस्थागत प्रसव सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने प्रसव केन्द्रों पर सभी आवश्यक व्यस्थायें सुनिश्चित बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने एएनएम, आशा व आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की नियमित बैठक करने तथा प्रभारी चिकित्साधिकारियों को नियमित रूप से भ्रमण कर इसका अनुश्रवण करते रहने के लिए निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाये। स्वास्थ्य से सम्बंधित जो योजनाएं संचालित है, उनका अच्छी तरह से क्रियान्वयन करते हुए लोगो को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर सीडीओ गौरव कुमार व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने की जनपद स्तरीय श्रम बंधु की बैठक

अखंड भारत संदेश

मजदूरों की सुरक्षा हेतु अपनाये जाने वाले सेफ्टी मेजर्स का अनुपालन सुनिश्चित करें : डीएम

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को संगम सभागार में जनपद स्तरीय श्रम बंधु की बैठक आयोजित की गयी। जिलाधिकारी ने बैठक में औद्योगिक श्रम शांति की स्थिति, दुकान एवं वाणिज्य अधिष्ठान तथा कारखानों में श्रम अधिनियमों के उल्लंघन पर कृत विधिक कार्यवाही, भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार अधिनियम के अंतर्गत उपकर संग्रहण एवं फीडिंग की स्थिति, अधिष्ठान पंजीयन, निरीक्षण की स्थिति, श्रमिक पंजीयन की स्थिति एवं उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं आदि एजेण्डा बिंदुओं की विस्तार से समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में सहायक श्रमायुक्त के द्वारा दुकानों एवं वाणिज्य अधिष्ठानों तथा कारखानों में श्रम अधिनियमों के उल्लंघन पर कृत विधिक कार्यवाही से अवगत कराया गया। उन्होंने बताया कि जनपद में औद्योगिक श्रम शांति बनी हुई है तथा किसी भी उद्योग में हड़ताल, तालाबंदी एवं बैठकी की कोई भी सूचना प्राप्त नहीं हुई है। जिलाधिकारी ने उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार अधिनियम के अन्तर्गत श्रमिक व अधिष्ठान पंजीयन की स्थिति पर असंतोष व्यक्त करते हुए कहा कि कैम्प लगाकर श्रमिकों व अधिष्ठानों का पंजीयन कराया जाये। उन्होंने कहा कि पात्र लाभार्थियों को श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ अवश्य दिलाया जाये तथा मजदूरों की सुरक्षा हेतु अपनाये जाने वाले सेफ्टी मेजर्स का अनुपालन सुनिश्चित किया जाये। इस अवसर पर सहायक श्रमायुक्त डॉ0 संजय लाल, एएलसी लालाराम, श्रम प्रवर्तन अधिकारी श्री मनोज कुमार, डॉ0 महेन्द्र प्रताप, अमिता शुक्ला, अवनीश त्रिपाठी एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जंक्शन पर शुरू हुआ पेड ऐसी वेटिंग हॉल

अखंड भारत संदेश

रेल यात्रियों को एक घंटे बैठने पर देना होगा 10 रुपये का शुल्क, मिलेगी वाई-फाई की सुविधा

प्रयागराज। रेलवे जंक्शन के एसी वेटिंग हॉल में बैठने पर 10 रुपये अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा। आज शुक्रवार को जंक्शन के प्लेटफार्म पर पहला पेड एसी वेटिंग हॉल का शुभारंभ हो गया है। इसमें किसी भी श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्री बैठ सकते हैं लेकिन इसके लिए यात्रियों को 10 रुपये प्रति घंटे के हिसाब से शुल्क भी देना होगा। प्रयागराज मंडल के जनसंपर्क अधिकारी अमित सिंह ने बताया कि इस वेटिंग हॉल का संचालन निजी एजेंसी द्वारा किया जा रहा है। वह यात्रियों को अतिरिक्त सुविधाएं भी मुहैया कराएगी और उसके बदले शुल्क भी लिया जाएगा जनसंपर्क अधिकारी ने बताया कि इस वेटिंग हॉल में 5 वर्ष तक के बच्चों का कोई शुल्क नहीं लगेगा। पांच वर्ष तक की उम्र के सभी यात्रियों को यहां 10 रुपये प्रति घंटे के हिसाब से चार्ज देना होगा। पेड एसी वेटिंग हॉल का शुभारंभ प्रयागराज से अतर्रा की यात्रा कर रहे 13 वर्ष के बालक मास्टर कनक सोनी के द्वारा किया गया। वटिंग हाल में भुगतान के आधार पर खानपान की सुविधा भी उपलब्ध है। यहां खान पान के स्टॉल भी लगाए गए हैं जहां उचित मूल्य पर पानी और खाने पीने का सामान खरीद सकते हैं। वेटिंग हॉल के अंदर संगम नगरी की ऐतिहासिक स्थलों की तस्वीरें भी लगाई गई हैं।

बच्चों के विवाद को लेकर दो महिलाओ ने एक विवाहिता को जमकर कर पीटा ,थाने में दी तहरीर

विगत पांच दिनो से दुधमुहे बच्चे को लेकर थाने का चक्कर काट रही पीड़िता सरिता की दर्ज नहीं हुई रिपोर्ट

मेजा। बच्चो बच्चो के विवाद को लेकर कथित महिलाओं द्वारा एक विवाहित महिला को लाठी डंडों से बुरी तरह मारपीट कर घायल किये जाने का मामला प्रकाश में आया है मेजा थाने में लिखित तहरीर देने के बावजूद भी बीते पांच दिनो से अपने दुधमुहे बच्चे को लेकर थाना मेजा का चक्कर काट रही पीड़िता सरिता की रपट दर्ज नहीं हुई मामला मेजा थाना क्षेत्र के बसहरा गांव का है । प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के उक्त गांव की रहने वाली सरिता पत्नी पप्पू बीते 24 जुलाई को थाना मेजा में दी गई तहरीर में इस बात का स्पष्ट जिक्र करते हुए लिखा है कि पडोस मे रहने वाली कथित महिला फूलकली व चंदा देवी व पीड़िता के बच्चो बच्चो मे आपस मे विवाद हो गया था जिसको लेकर उक्त दोनो महिलाओ ने पीड़िता सरिता को लाठी डंडों से बुरी तरह मारपीट कर चोटे पहुंचाई थी जिसके सम्बंध में सरिता ने घटना के दिन ही दोनो महिलाओ के विरुद्ध थाना मेजा में लिखित तहरीर देकर आई हुई चोटो का ईलाज कराने व रपट दर्ज कराने हेतु गुहार लगाई थी प्रकरण के सम्बंध मे पीड़िता का आरोप है कि वह बीते पांच दिनो से बराबर अपने दुधमुहे बच्चे को लेकर मेजा थाने में चक्कर काट रही है किंतु मेजा पुलिस द्वारा न उसकी रपट दर्ज की गई और न ही उसके शरीर में आई चोटों की डाक्टरी कराई गई प्रकरण के वावत पीड़िता सरिता की बातो की सच माना जाय तो उसके अनुसार उसका पति बाहर तमिलनाडु गया हुआ है वह घर पर अपने बच्चो व वृद्ध सासु ससुर के साथ रहती है आरोपित दोनो महिलाए बराबर उसकी हत्या करने की धमकियां दे रही है इस सम्बंध में महिला का कहना है कि यदि मेजा पुलिस द्वारा केश दर्ज नहीं किया गया तो वह उच्चाधिकारियों का दरवाजा खटखटाने को बाध्य हो जायेगी।

व्यापारियों ने में निकाला कैंडल मार्च

चौड़ीकरण का विरोध : व्यापारियों के साथ व्यापार मंडल अध्यक्ष एवं पार्षद राकेश जयसवाल ने हाथ में कटोरा लेकर किया विरोध प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी शुक्रवार को नैनी रेलवे क्रासिंग से मेवालाल बगिया चौराहे तक व्यापार मंडल नैनी अध्यक्ष तत्वावधान में व्यापारियों ने कैंडल मार्च और हाथों में कटोरा लेकर चौडीकरण का विरोध किया। व्यापार मंडल नैनी के अध्यक्ष एवं पार्षद राकेश जायसवाल ने बताया, कि जब तक अधिकारी व्यापारियों को लिखित आश्वासन नही देते तब कत हम अपनी लडाई जारी रखेगे। इस मौके पर व्यापार मंडल नैनी के अध्यक्ष एवं पार्षद राकेश जायसवाल, व्यापारी नेता घनश्याम जायसवाल, राजीव वर्मा गुडविल गैरेज, चन्द्रबली जाटव, धर्मराज पटेल, बच्चा लाल, कुंवर जी जायसवाल, राजा भाई गुड्डू मुस्लिम परवेज अहमद, रामजी जायसवाल डा. राकेश विश्वकर्मा, प्रिशं केसरवानी, विश्वास राठौर रोहित केसरवानी डॉ मोनू केसरवानी दिनेश केसरवानी बबलू केसरवानी निधि स्टूडियो आदि रहे।

न्यूज झरोखा

पांच क्विंटल अवैध गांजा व 140 बोरी सीमेंट के साथ डीसीएम सहित एक अभियुक्त गिरफ्तार

मेजा। मेजा पुलिस , एसओजी यमुनानगर पुलिस व आबकारी की संयुक्त टीम द्वारा एक गांजा तस्कर को गिरफ्तार किया गया। जिसके कब्जे से पांच कुन्तल 25 किलो अवैध गांजा,140 बोरी अल्ट्राटेक सीमेंट व परिवहन में प्रयुक्त एक डीसीएम ट्रक व एक ट्रैक्टर बरामद किया गया।डीसीपी यमुनानगर संतोष कुमार मीणा ने बताया कि गुरुवार की सुबह भोर में मुखबिर की सूचना पर थाना प्रभारी राजेश उपाध्याय, उपनिरीक्षक संजय यादव, उपनिरीक्षक उमेश चन्द्र पटेल, उपनिरीक्षक ब्रजेश कुमार तिवारी व उपनिरीक्षक रंजीत सिंह एसओजी टीम प्रभारी यमुनानगर जोन द्वारा पुलिस, एसओजी व आबकारी की संयुक्त टीम द्वारा अभियुक्त अमर बहादुर उर्फ भभुंदर पुत्र दशरथ निवासी कपूरी भरारी थाना मेजा प्रयागराज को मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र मेजा के सोनार तारा बाजार के पास से गिरफ्तार किया गया। जिसके कब्जे से पांच क्विंटल 25 किलोग्राम अवैध गांजा,140 बोरी अल्ट्राटेक सीमेंट व एक डीसीएम वाहन व एक सोनालिका ट्रैक्टर बरामद किया गया।

कमला सेवा संस्थान में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

उतरांव। रंगोली धार्मिक सांस्कृतिक आस्थाओ का प्रतीक माना जाता है शुक्रवार को उतरांव क्षेत्र के नीमीथारिया बाजार स्थित केडी पब्लिक इंटर मीडियेट कालेज में कमला सेवा संस्थान द्वारा रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। रंगोली प्रतियोगिता में सभी छात्राओं ने भाग लिया जिसमे एक से बढ़कर एक रंगोली आकर्षण बनाई गयी। वहीं रंगोली प्रतियोगिता में कक्षा 9 की छात्रा शान्ति पटेल प्रथम रहीं, कक्षा 9 की छात्रा अंजली द्वितीय रहीं, वहीं तृतीय स्थान पर कक्षा 9 की छात्रा कोमल रहीं। कालेज के प्रधानाचार्य विनय कुमार सिंह ने कहा की आज भी ग्रामीण अंचल आँगन बुहारकर लीपने के बाद रंगोली बनाने का परंपरा आज भी विद्यमान है और विभिन्न समारोह में रंगोली बनाया जाता है। कालेज की आध्यपिका दिव्यां सिंह ने कहा छात्राओं को पढ़ाई के साथ साथ इस तरह का कार्यक्रम होते है जिससे बच्चों में प्रतिस्पर्धा बनी रहती है। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्रधानाचार्य विनय सिंह के द्वारा मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर कालेज के दिनेश कुमार, मुनाईलाल, राजेश शर्मा, एकांत बहादुर, बीरेंद्र कुमार, लालमनी निर्मल, दिव्यां सिंह, सोनम पटेल, यासमीन, फरहिन, आयुषी, शालिया बनो, मुस्कान बनो आदि अध्यापक और अध्यपिका मौजूद रहीं।

निरंजन पुल के नीचे सड़क तैयार हफ्तेभर बाद लगाएंगे स्पैम

15 अगस्त तक पुल के नीचे रास्ता खोलने के लिए अफसरों ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। निरंजन रेलवे पुल के नीचे सड़क निर्माण का कार्य शुक्रवार को पूरा हो गया। अब अगस्त के पहले सप्ताह से ही स्पैम कंक्रीट के बड़े ग्डर लगाने का काम शुरू होग। उत्तर मध्य रेलव के महाप्रबंधक सतीश कुमार के निर्देश के अनुसार 15 अगस्त तक पुल के नीचे रास्ता खोलने के लिए अफसरों ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया है। आरसीसी के तीन पिलर खड़ा करने के साथ ही विस्तारीकरण का तकरीबन 80 प्रतिशत से अधिक काम पूरा कर लिया गया है। आरसीसी के पहले से तैयार 21 पियर भी कानपुर से निर्माणस्थल पर आ चुके हैं। सप्ताहभर बाद उन पियर को लगाने का काम शुरू होगा। इसके लिए बड़ी क्रेन भी मंगाई जा रही है जो अगस्त के पहले सप्ताह में पहुंचेगी। नौ मई को निरंजन पुल का रास्ता बंद होने के बाद से हजारों शहरी तो परेशान हैं ही दुकानदारों को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। पुराने शहर से सिविल लाइंस और तेलियरगंज आदि क्षेत्र के बड़े स्कूलों में पढ़ने के लिए आने वाले हजारों बच्चों और अभिभावकों को भी परेशानी हो रही है।

नैनी कोतवाली के वांछित इनामिया को वाराणसी में एटीएस ने दबोचा

नैनी। नैनी कोतवाली के इनामिया वांछित को एटीएस ने वाराणसी से गिरफ्तार कर लिया। उस पर एसटीएफ ने पिछले वर्ष मुकदमा दर्ज कराया था और 50 हजार का इनाम घोषित किया गया था। एटीएस ने उसे नैनी पुलिस को सौंप दिया। जहां से उसे लिखापढ़ी कर जेल भेज दिया गया। वर्ष 2022 में प्रयागराज की एसटीएफ ने छिवकी स्टेशन के समीप से 3.4 लाख रुपए के जाली नोट के साथ लीलापुर प्रतापगढ़ निवासी अच्छे लाल चौरसिया , मऊआइमा निवासी बबलू चौरसिया एवं मदनलाल हरिजन को गिरफ्तार किया था। मामले में पुलिस को पता चला था कि इनको जाली नोट पश्चिम बंगाल से दो लोग विश्वजीत सरकार और सुभाष मंडल उर्फ छोटू करते हैं। यह उन नोटों को प्रयागराज एवं आसपास में खपाते थे। विश्वजीत को पिछले माह गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। फरार चल रहे पश्चिम बंगाल स्थित मालदाह जिला के थाना वैश्णवपुरी थाना निवासी सुभाष मंडल उर्फ छोटू पुत्र हरिपद मंडल को उत्तर प्रदेश की एटीएस टीम ने मोहन सराय, वाराणसी से गिरफ्तार कर लिया।

अवंतिका विकास समिति द्वारा आजादी महोत्सव पर विभिन्न आयोजन शुरू

नैनी। नैनी मे आजादी के अमृत महोत्सव के उपलंक्ष मे अवंतिका विकास समिति नैनी द्वारा आयोजित होने वाले विभिन्न गतिविधियों का शुभारम्भ शुक्रवार को हुआ। प्रथम चरण मे स्कूलो के छोटे बच्चों मे देश प्रेम की भावना को प्रगाढ़ बनाने के क्रम मे शुक्रवार को अवंतिका कालोनी स्थित मार्ग दर्शक कान्वेन्ट स्कूल मे खेल-कूद प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। उक्त अवसर पर समिति की ओर से महिला मंडल की संयोजिका मीना जायसवाल, सह संयोजिका बिन्दू राठौड़, व नीलम द्विवेदी उपस्थिति रही। वही संस्थान के निदेशक विनीत मिश्रा व प्रधानाचार्या प्रीती श्रीवास्तव के निर्देशन में तथा शिक्षिका शिखा द्विवेदी, श्रुति,वैश्णवी, हेमा शुक्ला के सफल संचालन मे खेल प्रतियोगिताए सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता मे सफल छात्रों मे ईशान, शान्वी, तेजस्वी सीनियर वर्ग की लम्बी दौड़, अन्विका, श्रृंयांश, देवान्श, त्रिमिधि, आशाद, उम्मेद जूनियर वर्ग मे सफल रहे। इसी के साथ गोली चम्मच मे रौनक, निष्ठी, अनुपम, संकल्प, आरुषी, आदर्श भी प्रतियोगिता मे सफल विजेता रहे। अवंतिका विकास समिति की महिला मंडल ने सभी का धन्यवाद करते हुए बताया कि ऐसी ही कई सामाजिक गतिविधिया स्वतंत्रता दिवस तक चलती रहेगी।

अलंकरण समारोह पर होनहार मेधावी छात्रों को दी गई स्कॉलर ट्राफी

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी दिल्ली पब्लिक स्कूल प्रयागराज के सुरम्यप्रांगण में शुक्रवार को विद्यालय के कक्षा दसवीं और बारहवीं के मेधावी एवं होनहार छात्र-छात्राओं को स्कॉलर ट्राफी देकरसम्मानित करने के साथ-साथ अलंकरण समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह का शुभारंभ गणेश वंदना के साथ विशिष्ट अतिथि प्रो० रामा चरन त्रिपाठी (डाइरेक्टर एंड प्रोफेसर- जी० बी० पंत सोशल साइंसइन्स्टिट्यूट, प्रयागराज), रवीन्द्र धर (प्रो को ऑडिनेटर सी एम एस इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस स्वर्णिम अवसर पर विद्यालय के छात्र परिषद केसदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह अतिथिगण, विद्यालय की अध्यक्षा माननीया सोनू सिंह, प्राचार्या डॉ सुजाता सिंह, अध्यापकगण, अभिभावकगण और विद्यार्थियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ विद्यालय की प्राचार्य महोदया ने चयनित विद्यार्थियों को सैशे पहनाकर, बैज प्रदान कर उन्हें उनके कार्यभार से अवगत कराया साथ ही अनुशासन और लगन से काम करने के साथ-साथ उत्तरदायित्व निर्वहन का संदेश दिया। हेड ब्वाय अगम कोहली, हेड गर्ल कलिकाचतुवेर्दी ने अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहने की बात कही।अच्छे अंक हासिल करने वाले कक्षा दसवीं और बारहवीं के होनहार मेधावी छात्र-छात्राओं को स्कॉलर ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्राचार्य महोदया ने गर्व की अनुभूति के साथ सबका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए बच्चों में जोश और उत्साह जगाया। मुख्य अतिथि ने भी दिशा-निर्देशन के साथ विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण की सराहना किया। मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने इस समारोह में चार चाँद लगा दिया। राष्ट्रीय गान के साथ समारोह का समापन हुआ। ट्राफी के साथ बच्चों की मुस्कुराहट ने समस्त वातावरण को आह्लादित कर दिया।

सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली का आयोजन

प्रयागराज। शुक्रवार को एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय के विस्तार कार्य समिति, ट्रैफिक पुलिस प्रयागराज और प्रिम रोज संस्थान के संयुक्त तत्त्वाधान में सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत 'सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली' का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. लालिमा सिंह ने रैली को महाविद्यालय प्रांगण से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। छात्राओं ने महाविद्यालय के आसपास के लोगों को हैलमेट पहनने, यातायात के नियमों का पालन करने और दुर्घटना होने पर पीड़ित व्यक्ति को तत्काल सहायता पहुँचाने जैसे महत्त्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया। कार्यक्रम में श्री पवन कुमार पांडेय, प्रभारी (यातायात, जागरुकता एवं प्रशिक्षण) अपनी पूरी टीम के साथ उपस्थित रहे। इसके साथ ही प्रिम रोज संस्थान के प्रबंधक श्री फरहान आलम भी उपस्थित रहे।कार्यक्रम में विस्तार कार्य समिति की अध्यक्ष डॉ. नेहा राय और उनकी समिति के सभी सदस्य डॉ. आलोक मालवीय, डॉ. ममता भटनागर, डॉ. हरीश कुमार सिंह, डॉ. रिया मुखर्जी, डॉ. सौम्या कृष्ण, डॉ. प्रीति यादव, डॉ. प्रियंका गुप्ता, डॉ. कनुप्रिया की भी उपस्थिति रही। गैर शैक्षणिक सदस्यों में सुशील, वीरेंद्र एवं विक्की जी ने भी कार्यक्रम के सुचारू संचालन में अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

नाम संशोधन सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं अंश सिंह पुत्र श्री अशोक कुमार सिंह निवासी मझियारी कला (निबिहा) पोस्ट खेरहट खुर्द जनपद प्रयागराज का निवासी हूं मुझे अंश सिंह के स्थान पर अंश प्रताप सिंह जाना जाए।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश परीक्षा हाई स्कूल वर्ष 2010 अनुक्रमांक 200 4706 व परीक्षा इंटरमीडिएट वर्ष 2012 अनुक्रमांक 1459414 का अंकपत्र और प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है जिसका प्रयोग अवैध है जिस सज्जन को मिले नीचे लिखे पते पर पहुंचाने का कष्ट करें।

रीना सेन पुत्री राम चंद्र निवासी बरियावां पोस्ट खनदेवरा जनपद कौशाम्बी 8429785772

खबर संक्षेप

अग्निवीर वायु में भर्ती के लिए 17 अगस्त तक करें ऑनलाइन आवेदन

कौशाम्बी। अग्निवीर वायु इनटेक 01/2024 की भर्ती (पुरूष एवं महिला) के लिए विज्ञापन जारी किया गाय है। इच्छुक पात्र अभ्यर्थी दिनांक 27 जुलाई 2023 से 17 अगस्त 2023 तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर सकतें हैं। पात्र अभ्यर्थियों के लिए भारतीय वायु सेना में अग्निवीर वायु के रूप में अपना कैरियर बनाने के लिए सुनहरा अवसर है।

शांतिपूर्ण तरीके से कड़ा क्षेत्र में निकला मोहर्रम का जुलूस

कड़ा कौशाम्बी। कड़ा ब्लॉक क्षेत्र में गम के साथ शांतिपूर्वक मुहर्रम मनाया गया नखास कोना से मोहर्रम का जुलूस उठाया गया मालवीय के स्कूल होते हुए केएस कॉलेज होते हुए माटी गल्ली दरिया किनारा पर मोहर्रम का जुलूस समाप्त हुआ जुलूस के दौरान सुरक्षा व्यवस्था अमन चैन को लेकर पुलिस के जवान मौजूद रहे शांतिपूर्वक मोहर्रम का जुलूस मनाया गया।

दर्जनों लोगों पर लिखा गया मुकदमा नहीं हुई गिरफ्तारी

अखंड भारत संदेश

लंबे समय से जमे दीवान और दरोगा पर आरोपियों को बचाने के लिए लगा वसूली का बड़ा आरोप

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के राला बजहा गांव में 20 जुलाई को मारपीट के मामले में तीन दर्जन लोगों पर मुकदमा लिखे जाने के मामले में अभी तक पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया है दूसरे हल्का क्षेत्र में तैनात एक दीवान और दरोगा हस्तक्षेप कर अपराधियों को बचाने का ठेका लेकर वसूली में मशगूल बताए जाते हैं बताया जाता है कि वसूली में लिप्त यह दरोगा और दीवान लंबे समय से थाने में तैनात हैं लंबे समय से जमे एक दीवान और एक दरोगा का इलाके में अपराधियों नेताओं गहरे संबंध है आम जनमानस नेता संगठित अपराध से जुड़े लोगों के साथ-साथ अपराधियों से भी इनके मधुर संबंध बन चुके हैं जिससे इलाके के हर गतिविधियों पर इनकी नजर होती है और पूरे दिन अवैध वसूली में मस्त रहते हैं। तीन साल से थाने में जमे एक दिवान और एक दरोगा का इतना आतंक है कि बिना घूस लिए पीड़ित को न्याय नही मिलता बल्कि अपराधियों की मदद में यह दोनों लगे रहते हैं जिला बदर मुजाहिद की मदद करने अपने बीट एक नम्बर की ड्यूटी छोड़ कर इन दिनों सपा नेता की मदद करने में सपाई मानसिकता के दरोगा लगे है भोला यादव व,कुमकुम दिवान 2 नम्बर बीट का हल्का देखते है लेकिन दूसरे हल्का में इनका दखल होता है यह दोनों कोखराज थाने में तीन साल से जमे हुए है इनके चलते गरीबों को न्याय नहीं मिल पाता हैं राला बजहा में मार पीट की घटना में संलिप्तता कर एक जिला बदर सपा नेता को बचाने में तत्पर है 20 जुलाई को मार पीट की घटना में लगभग तीन दर्जन लोगों पर मुकदमा लिखा गया लेकिन एक भी मुजरिम की गिरफ्तारी नहीं हो सकीं गांव क्षेत्र के लोगों के बीच चर्चा है कि इन दोनों दरोगा व दिवान के कारण फिर कोई बड़ी घटना न हो जाये इस लिए आला अधिकारियों को मामले को गंभीरता से लेना होगा।

वर्षों बीते खुलेआम घूमने वाले रस्तोगी बंधुओं को नहीं गिरफ्तार सकी सैनी पुलिस!

फर्जी तरीके से धोखाधड़ी कर जमीन बेचने के नाम पर 77 लाख रुपए ठगी करने का रस्तोगी बंधुओं पर है आरोप

कौशाम्बी। फतेहपुर जनपद के राजकुमार गुप्ता और सैनी के रहने वाले अरविंद गुप्ता को झांसे में लेकर कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी के रस्तोगी बंधुओं ने पौने 4 बीघा जमीन 64 लाख रुपए बीघा के रेट से बेचने के नाम पर 77 लाख रुपए राजकुमार गुप्ता और अरविंद गुप्ता से भरवारी के रस्तोगी बंधुओं ने 3 साल पहले ले लिया लेकिन राजकुमार और अरविंद को जमीन नहीं मिल सकी औपचारिकता के लिए एग्रीमेंट लिखा कर दिया गया।

जब खरीददार राजकुमार और अरविंद को एहसास हुआ कि उनके साथ रस्तोगी बंधुओं ने धोखाधड़ी कर 77 लाख रुपए की ठगी की है पीड़ितों ने सैनी पुलिस की चौखट पर पहुंचकर न्याय मांगा लेकिन कौशांबी पुलिस की चौखट पर राजकुमार और अरविंद को न्याय नहीं मिल सका 77 लाख रुपए की ठगी करने वाले रस्तोगी बंधु मौज करते रहे पीड़ित राजकुमार ने अदालत के सामने न्याय की फरियाद की अदालत के निर्देश पर जुलाई 2022 में सैनी कोतवाली पुलिस ने शैलेंद्र रस्तोगी राजीव रस्तोगी आलोक रस्तोगी और हेमा रस्तोगी सहित छह लोगों के विरुद्ध धोखाधड़ी सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा अपराध संख्या 242 सन 2022 दर्ज कर लिया लेकिन रस्तोगी बंधुओं की गिरफ्तारी को सैनी पुलिस भूल गए या फिर पुलिस की सेटिंग हो गई जिससे रस्तोगी बंधु खुलेआम मंझनपुर से भरवारी घूमते टहलते व्यापार करते देखे जाते हैं मुकदमा दर्ज किए जाने के बाद भी धीरे-धीरे एक वर्ष का समय बीत गया लेकिन रस्तोगी बंधुओं की गिरफ्तारी सैनी कोतवाली पुलिस नहीं कर सकी है जबकि इसी मामले में एक आरोपी जेल भेजा जा चुका है जिसकी अदालत से जमानत भी निरस्त हो गई है अब सवाल उठता है कि फतेहपुर के लोगों को धोखे में रखकर हेरा फेरी फ्राड तरीके से जमीन बेचने का झांसा देकर 77 लाख रुपए की ठगी करने वाले रस्तोगी बंधुओं की गिरफ्तारी में आखिर कौशाम्बी पुलिस इतनी लापरवाह क्यों बनी हुई है एक वर्ष बीत जाने के बाद भी विवेचना नहीं पूर्ण हो सकी नामजद अभियुक्तो की गिरफ्तारी नहीं हो सकी जिससे विवेचक के कारनामों पर सवाल खड़े हो रहे हैं विवेचक के इस कारनामे को पुलिस अफसरों ने संज्ञान लिया तो जहां विवेचक पर गाज गिरना तय है वहीं रस्तोगी बंधु जेल की सलाखों में होगे।

न्यूज झरोखा

दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों की पेरेंट्स काउंसलिंग का आयोजन

कौशाम्बी। बीआरसी मंझनपुर में समेकित शिक्षा के अंतर्गत एनवायरमेंट बिल्डिंग प्रोग्राम के तहत दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों की पेरेंट्स काउंसलिंग का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।इस कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों के 55 अभिभावकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम मुख्य रूप से 2 सत्रों में आयोजित किया गया प्रथम सत्र में दिव्यांग बच्चों के शैक्षिक पुनर्वास एवं उपलब्ध सुविधाओं के बारे में अभिभावकों को जागरूक किया गया तथा दूसरे सत्र में दिव्यांग बच्चों के समस्याओं के संबंध में अभिभावकों से गहन विचार विमर्श कर व्यक्तिगत परामर्श दिया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित खण्ड शिक्षा अधिकारी मंझनपुर जवाहर लाल यादव द्वारा दिव्यांग बच्चों हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं एवं उनके उचित क्रियान्वयन के संबंध में अभिभावकों का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में रिसोर्स पर्सन के रुप में लइक अहमद आदि उपस्थित रहे तथा विकासखंड मंझनपुर के स्पेशल एजुकेटर्स राजीव कुमार तिवारी एवं श्रीमती श्रद्धा सिंह तथा फिजियोथेरेपिस्ट पंकज साहू द्वारा जिले में समेकित शिक्षा से संबंधित गतिविधियों से अवगत कराया गया तथा इससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

केसरिया जागृति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने विपुल त्रिपाठी

कौशाम्बी। केसरिया जागृति मंच ने विपुल त्रिपाठी को युवा मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया और यह दिलाशा दिया कि बहुत जल्द विपुल जैसे हीरे को केसरिया जागृति मंच मुख्य मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष का कार्यभार सौपेगी,इस मौके पर संस्थापिका नीतू गुप्ता ने बधाई देते हुए कि कहा कि हमे विपुल के रुप मे एक हीरा मिला है और राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशांत सिंह ने भी बधाई देते हुए कहा कि विपुल संगठन को शिखर तक ले जाने मे पूर्ण सक्षम है और संगठन के हिंदू बोर्ड प्रभारी कपिल शुक्ला ने बधाई देते हुए प्रगति की कामना की कौशाम्बी युवा जिलाध्यक्ष अंशू प्रजापति प्रदेशध्यक्ष युवा मोर्चा शुभम करवरिया एवं संस्थापक सदस्य एवं नियुक्ति प्रभारी आदि पदाधिकारीयो ने बहुत बहुत शुभकामनाएँ देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।विपुल ने संगठन के सभी पदाधिकारीयो का बहुत बहुत आभार जताया।

क्लीनिक में घुसे चोर उठा ले गए लैपटॉप इनवर्टर बैटरी टीवी पंखा

अझुवा कौशाम्बी सैनी कोतवाली क्षेत्र के विजयीपुर में दारानगर म्योहरा के रहने वाले मयंक सिंह पुत्र बलबीर सिंह ने इलेक्ट्रो पैथी से श्रीराम क्लीनिक खोल रखा है प्रतिदिन की तरह 27 जुलाई को भी क्लीनिक बन्द कर के मयंक सिंह वापस घर चले आए क्लीनिक बंद होने के बाद आधी रात को पड़ोसी की दीवार से छत पर चढ़े चोर क्लीनिक के अंदर घुस गए और क्लीनिक के अंदर रखा टीवी लैपटॉप इनवर्टर बैटरी पंखा चार्जर आदि सामान उठा ले गए हैं मामले की जानकारी होने पर मयंक सिंह ने सूचना पुलिस को दी है खबर लिखे जाने तक घटना का खुलासा नहीं हो सका है।

कार्यक्रम में छात्रों को बताया गया बाल विवाह करना है अपराध

बेनीराम कटरा कौशांबी नेवादा विकासखंड क्षेत्र के प्राथमिक बरियावा में गुरुवार के दिन बाल विवाह रोकथाम से संबंधित एनजीओ द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम के माध्यम से एनजीओ से आई सोनी सिंह और शैली पटेल ने स्कूल के छात्र छात्राओं को बताया कि बाल विवाह करना कानूनी अपराध है उन्होंने कहा कि 18 साल से कम उम्र में यदि कोई माता-पिता शादी करते हैं तो उसकी जानकारी सरकार और पुलिस थाने को दें 18 वर्ष की उम्र से कम उम्र में शादी विवाह करना कानूनी तरह से गलत है और इस कुप्रथा पर रोक लगाने की जिम्मेदारी हम सब लोगों की है बाल विवाह रोकथाम के उद्देश्य से जागरूकता रैली का आयोजन किया गया इस रैली के माध्यम से लोगों के बीच यह जानकारी दी गई कि बाल विवाह करना कानूनन अपराध है इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक सहित तमाम ग्रामीण गणमान्य लोग महिलाएं बच्चियां मौजूद रही।

चंद्रभूषण मौर्या बनाए गए सैनी कोतवाल

अझुवा कौशाम्बी सैनी कोतवाली के कोतवाल द्वारा फल विक्रेताओं के दुकानों में तोड़फोड़ सामानों को फेंकने का वीडियो वायरल होने के बाद सैनी कोतवाल सुभाष चौरसिया को पुलिस अधीक्षक ने गुरुवार की रात में लाइन हाजिर कर दिया सुभाष चौरसिया के स्थान पर चंद्रभूषण मौर्य को सैनी कोतवाल की जिम्मेदारी सौंपी गई है चंद्रभूषण मौर्या पुलिस अधीक्षक कार्यालय के पीआरओ थे।

भाजपा नेता ने शिक्षण संस्थाओं में किया पौधारोपण

अझुवा कौशाम्बी भाजपा के जिला उपाध्यक्ष धर्मराज मौर्या ने शिक्षण संस्थानों में पौधारोपण किया है इस मौके पर उन्होंने पौधारोपण से होने वाले फायदे को बताते हुए शिक्षण संस्थान के छात्र-छात्राओं शिक्षकों को पौधारोपण करने के लिए प्रेरित किया है भाजपा के जिला उपाध्यक्ष धरमराज मौर्या ने शुक्रवार को रामाधीन रामदास इन्टर कालेज दौलतपुर कसार एवं राजाराम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पथरांवां में पौधारोपण किया एवं छात्र छात्राओं को पौधे देकर उनका रोपण करके देखरेख हेतु संकल्प दिलाया।इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष डाक्टर रामराज मौर्य, प्रधान संघ अध्यक्ष एवं पूर्व मंडल अध्यक्ष अनिल विश्वकर्मा,बृजेंद्र केसरवानी,बिन्नू पंडा,रामनारायण मौर्य,पिन्टू विश्वकर्मा,दुर्गेश सिंह, सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

नशे में धुत बाइक सवार ने सड़क किनारे खड़े दो लोगो को मारी जोरदार टक्कर हालत गंभीर

कौशांबी चरवा थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम बलीपुर के पास शराब के नशे में धुत अनियंत्रित बाइक सवार ने सड़क किनारे खड़े दादा पोते दो लोगों को जोर दार टक्कर मार दी जिससे दोनों की हालत गंभीर हो गई टक्कर इतनी जोरदार थी की मौके पर दोनों लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े खून से लथपथ हालत में दोनों को नजदीकी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया। जिसकी शिकायत चरवा थाने में दी गई है। जानकारी के मुताबिक बलीपुर टाटा निवासी चंद्रपाल सिंह उर्फ टोनी पुत्र राज करण सिंह के ससुर मुन्नालाल पुत्र सुंदरलाल वा टोनी का भतीजा सार्थक उम्र करीब 2 वर्ष बलीपुर टाटा चौराहे पर दवा लेने गए थे दवा लेकर बलीपुर टाटा रोड किनारे की तरफ से दोनों आ रहे थे दीपू पटेल पुत्र स्वर्गीय श्री पटेल निवासी ग्राम चकबाद शाहपुर थाना चरवा अपनी मोटर साइकिल सुपर स्प्लेंडर में सवार होकर तेज व लापरवाही से शराब के नशे में धुत होकर बलीपुर टाटा चौराहा पार कर रहे थे सामने से जोरदार टक्कर मार दी जिससे टोनी के ससुर वा भतीजे बुरी तरह से घायल होकर खून से लथपथ होकर रोड के किनारे पड़े थे उक्त मोटरसाइकिल लेकर युवक मौके से भाग गया।

मुहर्रम की आठवीं में जुलूस के दौरान मजलिस को लेकर शिया समुदाय के लोग आपस में भिड़े जमकर चले लाठी डंडे

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिले के सैनी कोतवाली क्षेत्र में मुहर्रम की आठवीं में जुलूस के दौरान अलग अलग मजलिस करवाने को लेकर शिया समुदाय के लोग आपस में भिड़ गए ।आपस में जमकर लाठी डंडे चले,मजलिस वाले घर पर एक पक्ष के लोगो ने जमकर पथराव किया,वही घर के बाहर खड़ी गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की।मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जानकारी के मुताबिक सैनी कोतवाली के मुगहारी में देर रात मजलिस को लेकर दो पक्ष आपस में ही भिड़ गए,मामूली कहासुनी मारपीट तक पहुंच गई।जिसमे एक पक्ष के लोग मजलिस हो रहे घर पर चढ़ गए और जमकर लाठी डंडे और पत्थरबाजी की,घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस जांच में जुटी हुई है। वहीं पीड़ित पक्ष ने पुलिस पर आरोप लगाया है कि पुलिस ने आरोपियों को रात में ही छोड़ दिया और उन लोगो ने दोबारा घर पर चढ़कर गली गलौच की है,पुलिस की इस कार्यवाई से पीड़ित पक्ष में आक्रोश व्याप्त है।

सरसवां विकासखंड क्षेत्र के निरीक्षण में सीडीओ को मिली भारी अनियमितता

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने गुरुवार को विकास खण्ड सरसवॉ में विकास खण्ड स्तरीय अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ बैठक की बैठक के बाद उन्होंने क्षेत्र में विकास कार्यों का भ्रमण कर जायजा लिया भ्रमण के दौरान क्षेत्र में विकास कार्य में जमकर हेराफेरी धांधली मिली जिस पर उन्होंने अधीनस्थों की जमकर नकेल कसी है और कठोर चेतावनी देते हुए व्यवस्था में सुधार करने का निर्देश दिया है। बैठक के दौरान राकेश सिंह खण्ड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), सहायक सहित 13 ग्राम पंचायत सचिव उपस्थित थे। समीक्षा में प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24 में लक्ष्य के सापेक्ष 95 शतप्रतिशत जी0ओ0 टैगिंग कार्य पूर्ण होना पाया गया। इसी प्रकार मुख्यमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत कुल 195 का लक्ष्य है, जिसमें अभी 45 लाभार्थियों का सत्यापनोपरान्त फीड नहीं किया गया है इस सम्बन्ध में मौके पर उपस्थित सचिवों को निर्देशित किया गया कि आगामी 02 दिवस में शतप्रतिशत सत्यापन रिपोर्ट विकास खण्ड को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। मुख्य विकास अधिकारी ने विकास खण्ड सरसवॉ के अन्तर्गत ग्राम पंचायत ऐलई उर्फ बक्शी पार में जल-जीवन मिशन के अन्तर्गत मै0 बाबा कान्ट्रक्शन द्वारा कराये जा रहे कार्य का निरीक्षण किया, मौके पर कार्य बन्द पाया गया,केवल बोरिंग का ही कार्य अभी तक हुआ है, जो अत्यन्त ही खराब है। इस सम्बन्ध में मुख्य विकास अधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए प्रगति लाने के निर्देश दिए। मुख्य विकास अधिकारी ने विकास खण्ड सरसवॉ के अन्तर्गत ग्राम पंचायत लौगावा में गो-आश्रय स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान केयर टेकर मौजूद नहीं मिले, तदोपरान्त 01 केयर टेकर उपस्थित हुआ, उसके द्वारा अवगत कराया गया है कि इस गो-आश्रय स्थल में कुल 03 केयर टेकर है, जिसमें से 01 केयर टेकर बीमार है और 01 केयर टेकर खाना खाने गया हुआ। इस अस्थायी गो-आश्रय स्थल में कुल 63 कुन्तल भूसा की उपलब्धता पायी गयी। गो-आश्रय स्थल में 108 गोवंश संरक्षित किये गये है। गो-आश्रय स्थल में वृक्षारोपण का भी कार्य नहीं कराया गया, जो आपत्ति का विषय है। साथ ही गो-आश्रय स्थल में अभिलेखीय रख-रखाव अत्यन्त ही खराब पाया गया।

विद्यासागर मौर्य बनें एमबीसी सांस्कृतिक संवर्ग के प्रदेश अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

महेवाघाट कौशाम्बी। प्रियदर्शी है जो तीनों लोक मौर्य वंश सम्राट अशोक ,इस गीत के माध्यम से मौर्य वंश के स्वर्णिम इतिहास को गाकर सोशल मीडिया व जनता के बीच लोकप्रियता हासिल करने वाले विद्यासागर मौर्य को मौर्य बंधुत्व क्लब के संस्थापक रामसजीवन मौर्य ने सांस्कृतिक संवर्ग के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी है। विद्यासागर अच्छा संगीत गाने के अपने सुर सरगम की वजह से महफिलो में समां बांध देते है। कारण कई बार सम्मान पा चुके है। कार्यक्रमों में भाग लेकर महफिल में वाहवाही बटोरी हैं। मौर्य बंधुत क्लब हमेशा प्रियदर्शी सम्राट अशोक गाने को समाजिक उत्थान न्याय शिक्षा रोजगार गाकर युवाओं में जोश पैदा करने वाले समेत कई अहम मुद्दों को लेकर हमेशा विद्यासागर मौर्य कौशांबी के करारी के गुलामीपुर के रहने वाले हैं। अलख ज्योति जलाने का काम कर बचपन से ही इनको संगीत बहुत पसंद रहा है। कभी नमस्ते कौशांबी, नमस्ते थी जिसकी वजह से इन्होंने कई प्रयागराज, नमस्ते अयोध्या, नमस्ते सुल्तानपुर नमस्ते सोनभद्र समेत कई जनपदों में यह संगठन शिक्षा वहां की भौगोलिक स्थिति सामाजिक न्याय और शिक्षा को लेकर के अनेक कार्यक्रम किए है। गरीब परिवार के दर्जनों बेटियो की शादी भी करा चुका है। समाज में गति प्रदान करते हुए अपनी लेखनी के माहिर बड़े-बड़े मंचों पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनाने वाले विद्या सागर मौर्य इन दिनों बागपत में इंटर कालेज के प्रवक्ता है ।प्रदेश अध्यक्ष बनने की जानकारी जब उनके शुभ चिंतकों को हुई तो सोशल मीडिया में बधाई व शुभकामनाओं का ट्रेड तेजी से होने लगा। उन्होंने बताया कि जो जिम्मेदारी सौंपी गई है उसका निष्ठा पूर्वक निर्वाहन करने की पूरी कोशिश रहेगी। मैं संगठन के सभी शुभचिंतकों का आभार व्यक्त करता हूं।

शराबी पति के अत्याचार से अजीज आकर महिला ने की थाने में शिकायत

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम हरदुआ से एक मामला सामने आया है जहां एक शराबी युवक द्वारा पैतृक संपत्ति बेचने से पत्नी के मना करने पर अपनी ही पत्नी को बेरहमी से पीट दिया जिसकी शिकायत महिला ने चरवा थाना में दर्ज कराई। हरदुआ ग्राम निवासनी सविता देवी पत्नी भोला सरोज ने थाना चरवा में शिकायती प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि उसका पति भोला सरोज उसे बेरहमी से इस लिए पीट दिया की उसने पति को खेत ना बेचने के लिए कहा था। सविता देवी के अनुसार उसके छः बच्चे हैं और उसका पति भोला सरोज शराबी किस्म का व्यक्ति है, सविता देवी के पति भोला के नाम सवा बीघे खेत है। जिस खेत को भोला बेच रहा है। सविता ने मना किया की खेत मत बेचो बच्चे खायेंगे क्या। इतनी सी बात में सविता देवी का पति गुरुवार की सुबह करीब छः बजे लाठी डंडा से उसे मारा पीटा है तथा भद्दीझ्झभद्दी गाली गलौज देते हुए जान से मार डालने की धमकी दे रहा है। सविता देवी के दाएं पैर व शरीर में अन्य जगह चोटे आई है। सविता देवी की शिकायत पाकर पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है।

अन्नदाता की आर्थिक मजबूती समृद्ध भारत की संकल्पना का आधार : अनिता त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्र को एक लाख 25 हजार किसान समृद्ध केंद्र के राष्ट्र समर्पण के अवसर पर सैकड़ों किसानों की मौजूदगी में भाजपा जिलाध्यक्ष मुख्य अतिथि ने बोलते हुए कहा कि मौजूदा सरकार देश के अन्नदाता की आर्थिक मजबूती समृद्ध भारत के संकल्पना का आधार है। देश की यह सरकार किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत करने का विभिन्न प्रकार से कार्य कर रही है। जिससे देश के किसान भी देश की आर्थिक विकास में कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सके किसानों के आर्थिक मजबूती में पहली बार किसी ने सीधे किसानों को सहायता देने का काम किया है तो वह भारतीय जनता पार्टी की यही सरकार है जिसने किसान सम्मान निधि योजना आज सरकार के द्वारा जो देश को किसान केंद्र समर्पित करे जा रहे हैं वह भविष्य में किसानों को अपने को आर्थिक रूप से मजबूत करने का काम करेगी। इस पर मौके पर उन्होंने कहा कि आज देश की सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक रूप से मजबूत बनाने का संकल्प लेकर काम कर रही है विपक्षी दल योजनाओं में किसानों के आर्थिक समृद्धि में अड़ंगे डाल रहे हैं। इस मौके पर किसानों से बात करते कॉपरेटिव बैंक के चेयरमैन शिव मोहन मौर्या ने कहा कि आज कोऑपरेटिव के जरिए सहकारिता का अभियान चलाकर देश के किसानों को मजबूत करने का काम सरकार कर रही है यह कार्यशाला जिसमें नैनो खाद के विषय में किसानों को बताया जा रहा है उसका मूल्य कम है और यह रसायनिक खादों से अधिक कारगर है इसके छोड़ने से गांव में किसानों को कम मेहनत करनी पड़ेगी जिससे वह अधिक अच्छी खेती कर पाएंगे उन्होंने कहा कि सहकारिता विभाग पूरी तरह से किसानों की समृद्धि के लिए संकल्पित है इस मौके पर प्रमुख रूप से शिव प्रताप मौर्य रिंकू, वेद प्रकाश पाण्डेय सत्यार्थी, के साथ एआर कोपरेटिव राम किंकर, मनीष कुमार, कृषि विभाग की शुरूची विश्वकर्मा के साथ बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

धर्मा देवी में स्काउट गाइड प्रशिक्षण का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। धर्मा देवी इण्टर कॉलेज केन कनवार में 28 जुलाई को उत्तर प्रदेश स्काउट एवं गाइड उत्तर प्रदेश के प्रथम सोपान के तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में चौकी प्रभारी अझुवा अरुण कुमार मौर्य रहे। मुख्य अतिथि ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीपप्रज्वलन किया।विद्यालय के 2 छात्र अनूप कुमार गौतम एवं रुद्र प्रताप जिन्होंने राष्ट्रीय जम्बूरी कार्यक्रम पॉली,राजस्थान में उत्तर प्रदेश का नेतृत्व करते हुये उत्तर प्रदेश को प्रथम स्थान दिलाया गया ऐसे विजेता प्रतिभागियों को अपने कर कमलों से मुख्य अतिथि ने सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में छात्र/छात्राओं को अपने जीवन मे सफल होने हेतु अपना सर्वश्रेष्ठ देने की बात कहीं,एवं विद्यालय के अनुशासन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्काउट एवं गाइड ने टेन्ट बनाना,गैजेट्स, मीनार,पुल, प्राथमिक चिकित्सा आदि गतिविधियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के अवसर पर चुन्नीलाल जिला कमिश्नर स्काउट कौशाम्बी रामसुन्दर सिंह जिला सचिव स्काउट गाइड श्याम बाबू जिला संगठन कमिश्नर कु.वन्दना कुशवाहा जिला ट्रेनिंग काउन्सलर उमेश कुमार त्रिपाठी ओमकार तिवारी अखिलेश त्रिपाठी रामसुभग त्रिपाठी अमित त्रिपाठी आदि गणमान्य उपस्थित रहें।विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. रामकिरण त्रिपाठी ने आये हुये अतिथियों का स्वागत वंदन व अभिनन्दन किया।विद्यालय के स्काउट मास्टर ललित कुमार को मुख्य अतिथि ने अपने कर कमलों से सम्मानित भी किया।कार्यक्रम का संचालन रामशंकर सिंह ने किया।

डायट में पांच दिवसीय जीवन कौशल प्रशिक्षण का हुआ समापन

कौशाम्बी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मंझनपुर में पांच दिवसीय जीवन कौशल प्रशिक्षण का 28 जुलाई को समापन हुआ। उक्त प्रशिक्षण का आयोजन राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश के आदेश के क्रम में उपशिक्षा निदेशक प्राचार्य डायट कौशाम्बी के द्वारा आयोजित कराया गया। उक्त प्रशिक्षण का उद्देश्य विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा निर्धारित 10 कौशलों स्वजागरूकता, सृजनात्मक चिंतन, समलोचनात्मक चिंतन, समप्रेशन कौशल आदि की निपुणता पर आधारित था।इस अवसर पर डायट उपशिक्षा निदेशक श्रीमती भारती त्रिपाठी ने इसे शिक्षकों के साथ साथ हम सभी के लिए के लिए बेहद उपयोगी बताया कार्यक्रम का संचालन संयोजक कौशलेन्द्र मिश्र एवं डॉ वंदना सिंह प्रवक्ता डायट द्वारा किया गया। प्रशिक्षण सत्रों में संदर्भदाता कौशल कुमार तिवारी व ऋचा शर्मा द्वारा विभिन्न सत्रों में परिषदीय शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।शिक्षकों ने फीड बैक सत्र के दौरान इस प्रशिक्षण को व्यावहारिक, सैक्षणिक एवं जीवनपयोगी बताया गया। प्रशिक्षण के बाद प्रमाण पत्र वितरित किया गया इस मौके पर शिक्षक सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

पीएम आवास में अवैध वसूली से लाभार्थी परेशान

कौशाम्बी चायल तहसील क्षेत्र नगर पंचायत चरवा में प्रधान मंत्री आवास के नाम खुले आम दलाल लाभार्थी से पैसो की वसूली कर रहे है शुकरी देवी पत्नी धीरज पासी निवासी ग्राम चरवा नगर पंचायत वार्ड नं0 1 तहसील चायल का प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लाभार्थी में नाम आया जिसमें पहली किरत कुछ माह पहले मिल गयी दूसरी किस्त से पहले मकान निर्माण का फोटो ग्राफ अपलोड करना होता है जो की सरकार का मानक होता है उसी प्रकिया को करने के लिये व गरिबो से पैसे एठने के लिये दलाल रखे गये है जो गॉव गॉव जा कर लाभार्थी रकम की डिमांड करते हैं डूडा का पंकज इन दिनों वसूली में बदनाम है फोटो खींचने के बाद अपलोड करने के पहले धन की डिमांड शुरू हो जाती है।

संपादकीय

शांति व अहिंसा के प्रषिक्षण से ही सामाजिक समरसता संभव

पिछले वर्ष देश में पहली बार राजस्थान सरकार ने शांति एंव अहिंसा निदेशालय को सरकार के एक विभाग का दर्जा प्रदान किया था। राजस्थान सरकार के इस विभाग का उद्देष्य है-महात्मा गांधी के शांति एवं अहिंसा के सिद्धांतों का अधिकाधिक प्रचारित करने के अलावा समाज में आपसी सौहार्द्ध व भाईचारा को बढ़ावा मिले। साथ ही युवाओं और आम नागरिकों के बीच में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांतों को पहुंचाकर शांति एवं अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान कर युवाओं को गांधी दर्शन से परिचित करवाया जाये। इसके लिए विभाग द्वारा राजस्थान में युवाओं के उपखण्ड स्तर पर गांधी दर्शन प्रशिक्षण शिविर के आयोजन भी किये जा रहे है। इन प्रशिक्षणों से युवा कितना लाभ उठा पाते है ? यह विचारणीय हो सकता है लेकिन वर्तमान दौर में युवाओं को शांति एवं अहिंसा का प्रशिक्षण देना बहुत जरूरी है जिससे समाज में समरसता के भाव पैदा किया जा सके।

महात्मा गांधी का मानना था कि एकमात्र वस्तु जो हमें पशुओं से भिन्न करती है वह है अहिंसा। व्यक्ति हिंसक है तो फिर वह पशु के समान है। एक इंसान में मानव होने या बनने के लिए अहिंसा का भाव होना जरूरी है। आज की भाषा है कि हिंसा के बिना कोई कुछ नहीं सुनता। चारों तरफ हड़ताल, नारेबाजी व सरकारी सम्पितयों का नुकसान करने एवं आम जनता को परेषान कर सरकार से मांगे मनवाने के लिए लोग हिंसा का रास्ता अपना रहे हैं। सरकार भी इससे निपटने के लिए पुलिस को लाठी-गोली, आंसु गैस चलाने के लिए बाध्य दिखती है। यानी हिंसा एक हथियार है जो अहिंसा को पिछाड़ने में लगा है। अहिंसा यात्रा के प्रवत्रतक आचार्य महाप्रज्ञ का मानना था कि अहिंसा में हमारी आस्था तो है, मगर उस में गहराई नहीं है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि अहिंसा में आस्था जगाने वाले प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। जैसे पुलिस और सेना की जमात खड़ी की जा रही है, वैसे ही अहिंसक सैनिकों की जमात भी खड़ी की जाए, तभी अहिंसा की चेतना को जन-जन में प्रसारित किया जा सकता है। महाप्रज्ञ का मानना था कि समाज में अहिंसक व्यक्तित्व निर्माण के लिए अहिंसा का प्रशिक्षण बहुत जरूरी है।

अहिंसा अर्थात ऐसी जागृति रखना कि अपने मन-वचन-काया से किसी भी जीव को किंचित मात्र भी दुःख न हो। जब यह सिद्धांत आपके निश्चय और जागृति में दृढ हो जाएगा, तभी आप अध्यात्म में प्रगति कर सकेंगे। अणुव्रत अनुषास्ता आचार्य महाश्रमण का मानना है कि शांति केवल अहिंसा से ही संभव है पर अहिंसा का अर्थ इतना ही नहीं है कि किसी जीव की हत्या न की जाये. दूसरों को पीड़ा न पंहुचाना, उनके अधिकारों का हनन करना भी अहिंसा है। इस अहिंसा की पहले भी आवश्यकता थी और आज भी है पर आज विनाशक हथियारों के अंबार लगे हुए हैं। गरीबी एवं अभाव के कारण लोग नारकीय जीवन जीने के लिए विवश है। सैनिक छावनियों में लाखों-लाख सैनिक प्रतिदिन युद्धाभ्यास करते हैं। हिंसा की इतनी सूक्ष्म जानकारी और प्रशिक्षण दी दिया जा रहा है कि वर्षों तक यह क्रम चलता रहता है। हर वर्ष उसकी नयी-नयी तकनीक खोजी जाती है। नये-नये प्रेक्षापास्त, नये-नये टैंक सामने आ रहे है। हिंसा के प्रशिक्षण के लिए प्रचार-प्रसार पर मुट्ठी भर निहित स्वार्थी शक्तियों द्वारा अकूत संसाधन लगाये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मन में एक विकल्प उठता है कि इतनी ट्रेनिंग दी जाती है, तो क्या अहिंसा की प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है?

हिंसा के आंतरिक कारण में सबसे बड़ा पोषक कारण है-तनाव। वही आदमी हिंसा करता है, जो तनाव से ग्रस्त रहता है। हिंसा का दूसरा पोषक कारण है-रासायनिक असंतुलन। हिंसा केवल बाहरी कारणों से ही नहीं होती, उसके भीतरी कारण भी होते हैं। हमारी ग्रंथियों में जो रसायन बनते हैं, उन रसायनों में जब असंतुलन पैदा हो जाता है, तब व्यक्ति हिंसक बन जाता है.

हिंसा का तीसरा पोषक कारण है-नाड़ी तंत्रीय असंतुलन. नाड़ी तंत्रीय असंतुलन होते ही आदमी हिंसा पर उतारू हो जाता है। हिंसा का चैथा कारण है- निषेधात्मक दृष्टिकोण। घृणा, ईर्ष्या, भय, कामवासना ये सब निषेधक दृष्टिकोण हैं। उनसे भावतंत्र प्रभावित होता है और मनुष्य हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।

भगवान महावीर के अहिंसा, शांति और सद्भावना के दर्शन की तत्कालीन समय में जितनी आवश्यकता थी उससे अधिक आवश्यकता और प्रासंगिकता मौजूदा समय में है। भगवान महावीर के सिद्धांत आज वैज्ञानिक दृष्टि से भी मान्य हो गए है। उनके बताये मार्ग पर चलने से स्वस्थ, समृद्ध एवं सुखी समाज का निर्माण हो सकता है।

विकास के लिए शांति आवश्यक है। सभी वर्गों के समानांतर विकास से अनेक समस्याओं का समाधान मुमकिन है। अभाव और अत्यधिक उपलब्धता दोनों ही हानिकारक हैं। भगवान महावीर की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, युद्ध, आतंकवाद और हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता तथा गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी समसामयिक समस्याओं के समाधान पाए जा सकते हैं। भगवान महावीर ने छब्बीस सौ वर्ष पूर्व वैज्ञानिक रूप में एक ऐसी जीवन शैली जीने की शिक्षा दी, जिससे स्वस्थ समाज की संरचना संभव है। सही मायने में आज के इस दौर में अहिंसा व शांति के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

क्या नामीबिया और दक्षिणी अफ्रीका से लाए चीते पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित नहीं कर पाए?

सुनील कुमार महला

मध्य प्रदेश के श्योपुर स्थित कूनो नेशनल पार्क में चीतों की मौत भारत के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। जानकारी देना चाहूंगा कि कूनो नेशनल पार्क में अब तक 5 चीतों और 3 शावकों की मौत हो चुकी है और मीडिया खबरें बतातीं हैं कि अब पार्क में अब कुल 15 चीते और 1 शावक बचे हैं। जानकारी मिलती है कि कूनों में 27 मार्च को, साशा नाम की मादा चीता की किडनी की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। 23 अप्रैल को, उदय की, 9 मई को दक्षा की मौत हुई, 23-25 मई के बीच कूनो में जन्म 3 शावकों की मौत हो गई और 11 जुलाई को एक नर चीता तेजस मृत पाया गया। इसके बाद आठवें चीते सूरज की भी मौत हो गई।

कुछ समय पहले ही कूनो नेशनल पार्क में चीता पुनरोत्थान के लिए नामीबिया और साउथ अफ्रीका से 20 चीते लाए गए थे। नामीबिया से लाए गए 8 चीतों को भारत के पीएम मोदी ने अपने जन्मदिन पर 17 सितंबर, 2022 को कूनो नेशनल पार्क में छोड़ा था और पिछले साल सितंबर में आठ चीते नामीबिया से लाए गए थे। इन आठ चीतों में से पांच मादा चीते और तीन चीते नर थे। दक्षिण अफ्रीका से लाए गए 12 में सात नर और पांच मादा के बाद कूनो नेशनल पार्क में चीतों की कुल संख्या 20 हो गई थी। उल्लेखनीय है कि देश में वर्ष 1952 में चीतों के विलुप्त होने की घोषणा की गई थी और करीब 70 साल बाद देश के कूनो अभ्यारण्य में चीते दिखाई दिए थे।

'बिग कैट फैमिली' का हिस्सा चीता एकमात्र ऐसा बड़ा मांसाहारी जानवर है जो भारत में पूरी तरह से विलुप्त हो गया था और चीतों के विलुप्त होने की बड़ी वजह इनके शिकार को माना गया। इसके अलावा रहने का ठिकाना न होना(अधिवास न होना)भी चीतों के विलुप्त होने की वजह माना गया। यह भी माना जाता है कि मध्य प्रदेश के कोरिया के महाराजा रामानुज प्रताप सिंह देव ने 1947 में देश में अंतिम तीन चीतों का शिकार किया था। कूनो नेशनल पार्क को करीब एक दशक पहले गिर के एशियाई शेरों को लाने के लिए तैयार किया गया था न कि चीतों के लिए हालांकि, गिर से शेरों को कूनो नहीं लाया जा सका और कूनो में चीतों का अधिवास किया गया। बहरहाल, कुछ विशेषज्ञ इन मौतों का कारण चीतों को लगाए घटिया रेडियो कॉलर को मानते हैं। मीडिया के हवाले से खबरें सामने आई थीं कि ये कॉलर टाइगर के थे मगर चीतों को लगा दिए गए।जानकारों का मानना है कि टाइगर के लिए तैयार कॉलर चीतों को लगा दिए गए जिससे उनकी गर्दन छिल रही है और इन्फेक्शन हो रहा है। कूनो के सभी चीतों के पास अफ्रीकी वन्यजीव ट्रैकिंग रेडियो कॉलर है, हालांकि कई विशेषज्ञ इस कॉलर में लगे बेल्ट की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठा रहे हैं। कुछ का यह भी कहना है कि भारत लाने से पहले चीतों के गले पर पहले से ही इंफेक्शन था।

यहां यह भी बता दूं कि कुछ समय पहले चीतों को सड़े गले मांस खिलाने को लेकर भी विवाद उठा था और कूनो अभ्यारण्य के अधिकारियों पर बंदरबांट के आरोप भी लगे थे। बताया जा रहा है कि चार महीनों के समय में ही इन चीतों की जानें गईं हैं। कूनो में चीतों की मौत के पीछे जो भी कारण हों, लेकिन यह पर्यावरणविदों और वन्यजीव संरक्षण से जुड़े लोगों के लिए एक गहन चिंता का विषय बन गया है। वास्तव में, नामीबिया और दक्षिणी अफ्रीका की जलवायु और भारत की जलवायु में फर्क है। सभी देशों की जलवायु, तापमान, वनस्पतियां, आबोहवा व पारिस्थितिकी तंत्र अलग-अलग होते हैं और जीवों के लिए उनके साथ एकदम से तालमेल बिठाना व सामंजस्य स्थापित करना इतना आसान नहीं होता है। पारिस्थितिकी तंत्र का धरती के समस्त जीवों पर बहुत असर पड़ता है और वे बहुत बार अनुकूल जलवायु , अधिवास व पारिस्थितिकी तंत्र न मिलने पर सर्वाइव नहीं कर पाते हैं। बहुत से वन्यजीवों के शरीर की बनावट बेहद संवेदनशील होती है और आबोहवा बदलने का उस पर असर पड़ सकता है।

सच तो यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण जंगली जानवरों ही नहीं मनुष्यों तक को भी जीवित रहने के लिए नई चुनौतियों, नये वातावरण का सामना करना पड़ता है। लगातार सूखा, लगातार बारिश, आंधी-तूफान, गर्मी की लहरें, सर्दी, समुद्र के स्तर में वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना और महासागरों का गर्म होना कहीं न कहीं जंगली जानवरों को नुकसान पहुंचा सकता है, उनके रहने के स्थानों(अधिवासों) आदि को नष्ट कर सकता है। जलवायु परिवर्तन, प्रकृति का जानवरों, मनुष्यों पर असर पड़ सकता है। बहुत बार प्राकृतिक कारणों से भी जंगली जानवर बीमार पड़ सकते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि किसी पशु या जानवर पर नजर रखने के लिए कोई यंत्र उसके शरीर की संरचना के अनुकूल या प्रतिकूल भी साबित हो सकता है।

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में लाए गए चीते निश्चित रूप से देश में पारिस्थितिकी संतुलन की दिशा में एक ठोस पहल कहीं जा सकती है, लेकिन इसके साथ-साथ चीतों के संरक्षण के लिए भी जरूरी इंतजाम करना हम सभी का परम दायित्व व कर्तव्य होना चाहिए। यह ठीक है कि विभिन्न प्राकृतिक उतार-चढ़ावों का असर धरती के सभी जीवों पर कमोबेश पड़ता रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि तापमान, बारिश, हवा नमी जैसे जलवायुवीय घटक कहीं न कहीं जीवों को प्रभावित करते हैं। यहां यह भी कहना चाहूंगा कि जीवों के विकास को आंतरिक व बाह्य कारक भी प्रभावित करते हैं। आंतरिक कारकों में आनुवंशिकता, एंजाइम और हार्मोन आदि को शामिल किया जा सकता है,जबकि बाहरी कारकों में प्रकाश, पानी, तापमान और खनिज या पोषक तत्व आदि शामिल किए जा सकते हैं।

वन्यजीवों के मामले में कई बार स्थितियां कुछ ज्यादा ही संवेदनशील हो जाती हैं। कुछ पशु-पक्षी, जंगली जानवर किसी विशेष अनुकूल पर्यावरण में ही सुरक्षित व जीवित रह पाते हैं। दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से लाए गए बीस चीतों में कुछ के लिए शायद यहां के वातावरण से तालमेल बिठा पाना मुश्किल रहा और इसीलिए उनके जीवन और स्वास्थ्य के सामने कई तरह की जटिलताएं खड़ी हो रही हैं। हालांकि सरकार और संबंधित महकमे, पर्यावरणविद् और वैज्ञानिक चीतों की मौत, उनके बीमार होने(अस्वस्थ होने) के कारणों की खोज और उन्हें बचाने, उनका संरक्षण करने के लिए विभिन्न जरूरी उपायों को करने में लगातार लगे हैं, लेकिन इस संबंध में सभी जरूरी एहतियात, विभिन्न सुविधाओं के साथ ही इस संबंध में गहन अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण और काबिलेतारिफ बात है कि सरकार ने बाघों की तरह चीतों के संरक्षण के लिए भी चीता परियोजना का समर्थन करने के लिए कई आवश्यक व जरूरी कदम उठाने की बात की है। सरकार प्रकृति के साथ होड़ तो कदापि नहीं कर सकती है लेकिन आवश्यक व जरूरी कदम उठाकर चीतों का संरक्षण करने की दिशा में नायाब पहल जरूर कर सकती है और प्रयासों तथा पहल से ही सबकुछ संभव बनाया जा सकता है।

- राजपूत या गुर्जर से पहले वीर हिन्दू सम्राट थे मिहीर भोज

-डॉ उमेश प्रताप वत्स

सम्राट मिहिर भोज को लेकर गुर्जर और राजपूत के बीच लम्बे समय से विवाद चल रहा है। दोनों ही समाज एक-दूसरे के विरुद्ध हिंसात्मक होते जा रहे हैं। मई में पश्चिमी यूपी के सहारनपुर में दोनों ही समाज आमने-सामने आ गए थे। टकराव की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए जिले में धारा 144 लागू कर इंटरनेट बंद किया गया तथा दर्जनभर से अधिक लोगों को गिरफ्तार कर कुछ के विरुद्ध एफआईआर भी दर्ज की गई। वास्तव में पूरा विवाद सम्राट मिहिर भोज की जाति से जुड़ा हुआ है। जो कि नाक का सवाल बन गया है। गुर्जर समाज के लोग सम्राट मिहिर भोज को गुर्जर मानते हैं, वहीं राजपूत समाज उन्हें एक क्षत्रिय राजा मानता है। देश के कई राज्यों विशेष रूप से उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और अब हरियाणा में यह विवाद सिर चढ़कर बोल रहा है।

ताजा विवाद हरियाणा के कैथल जिले का है, जहाँ पुलिस सुरक्षा में ढांड रोड पर स्थानीय भाजपा विधायक लीला राम गुर्जर द्वारा मिहिर भोज की प्रतिमा का अनावरण किया गया। यद्यपि अनावरण से एक दिन पहले, राजपूत समुदाय के लोगों ने शिलालेख में मिहिर भोज को हिंदू सम्राट की बजाय गुर्जर सम्राट लिखे जाने पर आपत्ति जताई और विरोध में प्रदर्शन किया। इसके उपरांत भी जल्दबाजी में प्रतिमा का अनावरण तथा आपत्ति जताने पर पुलिस द्वारा राजपूत समाज पर किये गये लाठीचार्ज ने विवाद को ओर अधिक सुलगा दिया।

गुर्जर व राजपूत दोनों ही समाज प्राचीन काल से भारत की सुरक्षा हेतु अग्रणी समाज रहे हैं। सभ्य समाज व दायित्ववान व्यक्तियों को देश के प्रति दोनों ही समाज की निष्ठा, देश प्रेम और सुरक्षा भावना को देखते हुए सम्मानित ढंग से विवाद को सुलझाकर दूरदर्शिता का परिचय देना चाहिए।

यद्यपि जो समाज अपने राष्ट्र के महापुरुषों व संघर्षरत रहे क्रांतिकारियों, अमर बलिदानियों को विस्मृत कर देता है, वह समाज अंत की ओर होता है किंतु हमें अपने महापुरुषों, महान क्रांतिकारियों को जाति-धर्म में बाँटने का प्रयास भूलकर भी नहीं करना चाहिए। क्या होगा यदि राजपूत समाज आगे आकर विस्तृत हृदय की बात रखते हुए कहे कि ठीक है सम्राट मिहिर भोज पूरे राष्ट्र के सम्मानीय हैं, तुम भी उनकी प्रतिमा का अनावरण करो और हम भी करेंगे। इसी तरह गुर्जर समाज भी यदि बात को सुलझाते हुए बोले कि सम्राट मिहिर भोज पूरे देश के महान चक्रवर्ती सम्राट रहे हैं तो हम गुर्जर सम्राट कहने की बजाय उनको हिंदू सम्राट कहकर ही संबोधित करेंगे ताकि विश्वभर में यह संदेश जाये कि हिंदुस्थान के महान पराक्रमी सम्राट रहे हैं मिहिर भोज। इतिहास छत्रपति शिवाजी महाराज को भी राजपूत सिसोदिया वंश से मानता है जबकि मराठवाड़ा में उन्हें भगवान की तरह माना जाता है और मराठा ही मानते हैं ऐसा नहीं है पूरा देश शिवाजी महाराज को सम्मान देता है, उनके कार्यों का गुणगान करता है। महाराणा प्रताप को सारा हिंदुस्थान मानता है। कोई भी समाज उनकी प्रतिमा का अनावरण करें, यह गर्व की बात है।

हम शहीद भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर या चंद्रशेखर आजाद की जाति नहीं पूछते हैं। वे पूरे राष्ट्र के सम्मानीय पूजनीय हैं। इसी प्रकार मिहिर भोज पूरे देश के हैं। महान पुरुषों को कभी विवाद का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए।

संत शिरोमणि रविदास जी व महान ऋषि बाल्मीकि जी के देश में लाखों मंदिर हैं किंतु वास्तविक निष्ठा तब दिखाई देगी जब हर मंदिर में महान संत बाल्मिकी, संत रविदास जी की प्रतिमा हो अपितु इनके साथ ही भगवान परशुराम, ऋषि कश्यप, ऋषि भारद्वाज, ऋषि वशिष्ठ, ऋषि अगस्त्य, महर्षि वेदव्यास, महर्षि दयानंद व विवेकानंद की प्रतिमा एक साथ दिखाई दे। क्यों न इन महान संतो, महापुरुषों, महान सम्राटों, महान राजाओं व महान क्रांतिकारियों को कोई एक समाज नहीं अपितु पूरा राष्ट्र माने? क्यों न पूरा विश्व इनके द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा करें? क्यों न हम सब इनके समक्ष नतमस्तक हो? ये हम सबके पूर्वज हैं। हम सबके पथप्रदर्शक हैं।

सातवीं शताब्दी में नागभट्ट प्रथम प्रतिहार राजवंश के राजा थे। पुष्यभूति साम्राज्य के हर्षवर्धन के बाद पश्चिमी भारत पर उनका शासन था। उनकी राजधानी कन्नौज थी। उन्होंने सिन्ध के अरबों को पराजित किया और काठियावाड़, मालवा, गुजरात तथा राजस्थान के अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। 780 ईस्वी में उनकी मृत्यु हो गई। माना जाता है कि मिहिरभोज इस वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। यह रामभद्र व माता अप्पा देवीका पुत्र था। इसका सर्वप्रथम अभिलेख वराह अभिलेख है जिसकी तिथि 893 विक्रम संवत है। अतः इसका शासनकाल लगभग 836 ई. से प्रारंभ हुआ माना जाता है इसके शासनकाल की अंतिम तिथि 885 ई. थी। कहा जाता है कि 50 वर्षों से अधिक समय तक उत्तर भारत के कुछ हिस्सों पर शासन करने वाले मिहिर भोज का साम्राज्य पश्चिम में मुल्तान से लेकर पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैला हुआ था।

मिहिर भोज ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसकी स्थायी राजधानी कन्नौज बनी। कश्मीरी कवि कल्हण की ह्लराजतरंगिणीह्व में मिहिरभोज की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। अरब यात्री ह्लसुलेमानह्व ने मिहिरभोज को भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है, जिसने अरबों को सिंधु से परे ही आगे बढ़ने से रोक दिया था। मिहिरभोज ने कालिंजर पर अपने अधिकार की स्थापना वहां के चंदेल नरेश जयशक्ति को पराजित करके की थी। गुजरात प्रदेश पर पुनः अपना अधिकार करने के लिए मिहिरभोज को मंडौर की प्रतिहार शाखा के राजा बाऊक का दमन करना पड़ा था। यह अनुमान जोधपुर अभिलेख पर आधारित है। बंगाल के राजा देवपाल के बेटे को शिकस्त देकर सम्राट मिहिर ने उत्तरी बंगाल को भी अपनी सल्तनत में शामिल किया। कन्नौज पर कब्जा करने के लिए उत्तर भारत, बंगाल और दक्षिण भारत के राजाओं की तरफ से कोशिश की गई किंतु वे सफल न हो सके। जिसे त्रिकोणीय संघर्ष कहा गया था। जीवन के अंतिम पड़ाव पर उन्होंने बेटे महेंद्रपाल को सत्ता सौंपी और संन्यास ले लिया। तथ्य बताते हैं कि 72 वर्ष कीआयु में उनका देहांत हो गया था।

कुछ इतिहासकार कहते हैं कि वो गुर्जर समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। हालांकि, उनका यह भी मानना है कि गुर्जर और राजपूतों की उत्पत्ति को लेकर इतिहास विवादित रहा है। 7वीं शताब्दी में हर्षवर्धन के बाद से लेकर 12वीं शताब्दी तक के काल को राजपूत काल कहा जाता है। मध्यकालीन भारत पुस्तक के लेखक और इतिहासकार प्रोफेसर वीडी महाजन कहते हैं, सम्राट मिहिर प्रतिहार वंश के शासक थे। राजपूत समुदाय का तर्क है कि वह प्रतिहार-राजपूत राजवंश से थे, और गुर्जर शब्द का गुर्जर समुदाय से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि यह वर्तमान दक्षिणी राजस्थान और उत्तरी गुजरात के उस क्षेत्र के संदर्भ में है जो उस वक्त उनके साम्राज्य का हिस्सा था।

महाराष्ट्र में राजनीति की शतरंज की बिसात पर चली जा रही हैं बड़ी चालें

अशोक भाटिया

संभावना हो या कयास, राजनीति में सबकी गुंजाइश रहती है। कुछ भी असंभव नहीं है। महाराष्ट्र की राजनीति अपने रंगमंच पर इसी तरह के इंद्रधुनषी रंग बिखेर रही है। अपने चाचा से अलग जाकर एनडीए से जुड़ने और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने के सपने देखने वाले अजित पवार हर दिन मजबूत हो रहे हैं। प्रतिक्रिया न देकर शरद पवार झटका झेलकर अपना कद बनाए हुए हैं। कांग्रेस खामोश है। उप मुख्यमंत्री अजित पवार से मुलाकात के बाद शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे और उनकी सेना (संजय राउत और अन्य) संतुष्ट नजर आ रहे हैं। घटनाक्रमों में दिलचस्प है कि राजनीति का खेल भाजपा के रणनीतिकारों को भी अच्छा लग रहा है। एनसीपी (अजित पवार) और शिवसेना (उद्धव ठाकरे) को भरोसा है कि जल्द ही अजित पवार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनेंगे।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दिल्ली आकर परिवार के सदस्यों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट की। इन घटनाक्रमों के समानांतर एकनाथ शिंदे गुट के शिवसैनिकों में अभी भी असमंजस की स्थिति बनी हुई है। ठाणे क्षेत्र के एकनाथ शिंदे के विश्वस्त का कहना है कि हमारे पास भाजपा के नेताओं द्वारा दिया गया भरोसा है। सूत्र का कहना है कि ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला। अगले साल चुनाव तक राज्य के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ही रहेंगे। दिल्ली यात्रा के बारे में मराठा नेता का कहना है कि वह निजी यात्रा में दिल्ली गए हैं। हालांकि, सूत्र ने दिल्ली में किसी बड़े भाजपा नेता से मुलाकात की संभावना से इनकार नहीं किया है। वैसे ऐसी चर्चा महाराष्ट्र में जोरों पर हैं कि पवार के पावर गेम में भाजपा फंस गई है । पिछले सप्ताह हुए एक सर्वे में एनसीपी के 66 फीसदी समर्थक शरद पवार और 25 फीसदी ही अजित पवार गुट के साथ बताए गए हैं। ऐसे में राज्य में बहुमत की सरकार में अजित गुट को शामिल करने के औचित्य को लेकर सवाल उठने लगे हैं। वैसे भी महाराष्ट्र की सरकार में अजित पवार गुट को शामिल कर भ्रष्टाचार और हिंदुत्व के मुद्दे पर भाजपा के लिए आक्रामक राजनीति करना आसान नहीं रहने वाला है। कहा जा रहा है कि पवार परिवार के पावर गेम को डिकोड करने में भाजपा उलझ गई है और लोकसभा के मद्देनजर किया जाने वाला ये प्रयोग सफल नहीं रहने वाला है।

पिछली बार अजित पवार देवेंद्र फड़णवीस के साथ सरकार में शामिल हुए थे और अस्सी घंटे में सरकार का साथ छोड़ चाचा शरद पवार के साथ हो लिए थे। बाद में देवेंद्र फड़णवीस ने सरकार बनाने को लेकर शरद पवार की रजामंदी की बात को सार्वजनिक कर दिया था। फिर शरद पवार और अजित पवार ने मिलकर पलटी क्यों मारी थी। इसको समझ पाना अभी तक संभव नहीं हो सका है।

इस बार भी अजित पवार गुट भाजपा की सरकार में शामिल होने के बाद दो बार शरद पवार से जाकर मिल चुका है। भतीजे का गुट चाचा को मनाने में जुटा है, ऐसा दावा किया गया है लेकिन इससे एक बात तो तय है कि परिवार में कटुता पार्टी में टूट के बाद भी नहीं बढ़ी है। वहीं अजित पवार को लेकर ये कहा जाता है कि ईडी के भय से सरकार में शामिल होना उनकी मजबूरी रही है। अजित पवार सहित छगन भुजबल और हसन मुसरिफ सरीखे नेता ईडी के डर से भाजपा के साथ सरकार में आए हैं ये कहा जा रहा है।

ऐसे में अजित गुट का भाजपा के साथ बने रहना लोकसभा चुनाव के परिणाम पर निर्भर करता है । लोकसभा चुनाव में बाजी पलटने पर चाचा शरद पवार के साथ अजित पवार एकबार फिर वापस आ सकते हैं। जाहिर है पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए इससे इन्कार करना मुश्किल है ।

आखिर क्यूं बरी हो जाते हैं गंभीर मामलों के दोषी ?

-प्रियंका सौरभ

देश में जूडिशरी और पुलिसिंग की लचर व्यवस्था के चलते ही कई गंभीर से गंभीर मामलों के आरोपी भी अदालत से बाइज्जत बरी हो जाते हैं। इनके बरी हो जाने के बाद बौद्धिक वर्ग तमाम तरह के सवाल उठाने शुरू कर देता है। उसके बाद सिस्टम के उन लूपहोल्स पर चर्चा होती है जिसके कारण अपराधी बरी हो जाते हैं मगर ये सब सिर्फ कुछ दिनों तक ही रहता है उसके बाद फिर सिस्टम उसी तरह से अपने हिसाब से चलने लगता है। इसमें सुधार नहीं हो पाता है। कोई केस जितने लंबे समय तक अदालत में पेंडिंग रहता है उसका फैसला उतना ही कमजोर तरह का आता है। यदि अदालत की ओर से कोर्ट में केस के लिए तारीख पर तारीख ली जाती रहती है तो उसका रिजल्ट भी अच्छा नहीं आता है। लंबे समय तक केस चलने के दौरान उस मामले से जुड़े अधिकारियों का तबादला हो जाता है, कई गवाह मर चुके होते हैं। सबूत खो जाते हैं। इन सभी का फायदा अपराधियों को मिलता है।

देश का जूडिशरी सिस्टम अभी भी तेज गति से काम नहीं कर रहा है जिसका रिज्लट अपराधियों के बरी हो जाने के तौर पर सामने आता है। अदालत में जो केस जितना अधिक लंबा चलता है उससे लोगों की रूचि खत्म होती जाती है। यदि कोई बड़ा मामला होता है और उस केस में अदालत से फैसले के लिए सिर्फ तारीख ही तारीख मिलती रहती है तो उस केस से लोगों का दिलोदिमाग हट जाता है। कई बार मुद्दई टूट जाते हैं। इसमें कई बार पुलिस की टीमें भी दोषी होती है, वो देर से चार्जशीट फाइल करती है, इस वजह से कोर्ट में तारीख मिलती रहती है। वकील भी मामलों में देरी से फैसला करवाने के लिए जिम्मेदार होते हैं वो केस को लंबित करते चले जाते हैं। यदि पुलिस पर्याप्त सबूतों के साथ केस फाइल करे और अदालत जल्द फैसला सुनाने पर आमदा हो तो आरोपी छूटने नहीं पाएंगे।

कई बार पुलिस की जो जांच पड़ताल होती है उसमें कई सारी खामियां रह जाती है, इसका पूरा लाभ अपराधियों को मिलता है। किसी अपराधिक घटना में शामिल अपराधियों का उससे बरी हो जाना सिस्टम के मुंह पर तमाचा सरीखे होता है। जूडिशरी लंबे समय तक मामले की सुनवाई के लिए तारीख देता है। कई बार लंबी सुनवाई के दौरान गवाह टूट जाते हैं, उनकी मौत हो जाती है, वकीलों की भी रूचि खत्म हो जाती है। गवाह भी चीजों को भूल जाते हैं।

मानिकपुर पुलिस का नाबालिग छात्रा के सामूहिक दुष्कर्म में क्रूर चेहरा आया सामने

चुप्पी तोडो खुलकर बोलो का अब पुलिस बताये क्या हुआ? पीडिता के परिजनों को थानाध्यक्ष ने दी थी धमकी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सामूहिक दुष्कर्म की शिकार नाबालिग छात्रा के मामले में मानिकपुर थानाध्यक्ष वीरप्रताप सिंह का क्रूर चेहरा सामने आया है। थानाध्यक्ष ने पीडिता के परिजनों को गाली-गलौज कर फटकार लगाकर तहरीर बदलवाई है। इस मामले में थानाध्यक्ष पर परिजनों ने कडी कार्यवाही की मांग की है।

शुक्रवार को सामूहिक दुष्कर्म की शिकार नाबालिग बालिका के परिजनों ने कहा कि थानेदार उसकी बेटी के गुनाहगारों को बचा रहे हैं। चार लोगों ने बेटी के साथ दुष्कर्म किया है। बेटी दर्द से तड़प रही है। पेट में सूजन है। पीडिता की मां ने कहा कि वह चुप नहीं रहेगी। उसकी बेटी की जिंदगी खराब हुई है। उसे हरहाल में न्याय दिलाकर रहेगी। 26 जुलाई को बेटी के साथ रात में थाने पहुंचे थे। परिजनों की शिकायत पर सिर्फ एक शिक्षक पर रिपोर्ट लिखी गई है। परिजनों के आरोप हैं कि बेटी के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुआ है। स्कूल के चार शिक्षकों ने रेप किया है। कालेज में तैनात संविदा शिक्षक मो इरशाद निवासी शास्त्रीनगर को नामजद किया है। पिछले पांच माह से सभी लोग उसके साथ

दुष्कर्म कर रहे थे। बालिका की स्कूल से छुट्टी के बाद अलग से क्लास लेने के बहाने रोका जाता था।

शिक्षक लगातार छात्रा को स्कूल से नाम काटने व वीडियो वायरल करने की धमकी देता था। इसी भय से छात्रा ने परिवार में किसी को कुछ नहीं बताया। मंगलवार की रात छात्रा बर्थडे में शामिल होने गई थी। वहां तबीयत बिगडने पर परिजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मानिकपुर ले गए तो डॉक्टरों ने छात्रा के गर्भपात की जानकारी दी। डॉक्टरों ने परिजनों को सब कुछ बता दिया। मौके पर मौजूद छात्रा के फुफेरे भाई ने परिजनों से उसी दिन इस बात का जिक्र किया था। छात्रा बहुत डरी थी। बुधवार को छात्रा के पिता ने पुलिस को सूचना दी।

थानाध्यक्ष वीर प्रताप सिंह ने पीडिता के परिजनों को गाली-गलौज व फटकार लगाते हुए झूंठे मामले में भाई को फंसाने की धमकी देकर सिर्फ एक शिक्षक के खिलाफ तहरीर लिखवा ली। मनमानी ढंग से मामले को दर्ज किया। इस मामले में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी ने कहा कि मामले की विस्तृत जांच को सीओ निष्ठा उपाध्याय के साथ क्राइम ब्रांच को लगाया गया है। क्राइम ब्रांच ने जांच शुरू कर दी है। कुल मिलाकर इस मामले में मानिकपुर थाना पुलिस का क्रूर चेहरा सामने आया है।

ग्रामीण के साथ हुई धोखाधडी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। रैपुरा थाने के कुईं गांव के नरेन्द्र प्रसाद पुत्र स्व देशराज ने रैपुरा थानाध्यक्ष को दी तहरीर में कहा कि उसके साथ धोखाधडी कर ट्रांसफार्मर चोरों के खिलाफ कार्यवाही की जाये। शुक्रवार को रैपुरा थाने के कुईं गांव के नरेन्द्र प्रसाद पुत्र स्व देशराज ने रैपुरा थानाध्यक्ष को दी तहरीर में कहा कि बैजनाथ शुक्ला पुत्र गिरजा शुक्ला निवासी पाहकंजारी ने उससे नलकूप कनेक्शन को डेढ लाख रुपये लिए थे। 12.9.2019 को 58 हजार 867 रुपये की रसीद देने के बाद कहा था कि विद्युत का सभी सामान आने के बाद हिसाब कर दूंगा। अक्टूबर 2021 में नलकूप कनेक्शन को ट्रांसफार्मर, विद्युत खम्भे, तार आदि से लाइनमैन ने कनेक्शन कर दिया। इसके बाद उसने रुपये वापस करने को कहा तो कहने लगा कि उसका विद्युत बिल जमा कर देगा। 26 जुलाई 2023 को उसका कनेक्शन काट दिया गया। बैजनाथ आदि ट्रैक्टर से उसका ट्रांसफार्मर आदि ले गये हैं। पीडित ने कहा कि बैजनाथ ने उसके साथ धोखाधडी की है। उसके नाम ट्रांसफार्मर जारी नहीं हुआ। पीडित ने मामले की रिपोर्ट दर्जकर कानूनी कार्यवाही की मांग की है।

ढाई किलो से कम वजन के बच्चों की दें सूची: डीएम

जिला पोषण समिति की बैठक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने जिला पोषण समिति की बैठक में सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी तथा बाल विकास परियोजना अधिकारियों को निर्देश दिए कि एनएफएचएस-5 सर्वे को ध्यान में रखते हुए संभव अभियान 3.0 में सभी बच्चों का पुनः वजन, लंबाई, ऊंचाई की नाप कराकर पोषण ट्रैकर एप पर फीड करायें। सैम बच्चों की सूची ईकवच एप पर फीड करायें। जो बच्चे पोषण पुनर्वास केंद्र से ठीक होकर जाते हैं, उनकी पुनः जांच आरबीएसके टीम करें।

शुक्रवार को कलेक्टेज्ट सभागार में जिला पोषण समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी एवं बाल

विकास परियोजना अधिकारी को क्षेत्र में भ्रमण करने को कहा। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी से कहा कि जो ढाई किलोग्राम से कम वजन वाले बच्चे हैं, उनकी सूची सभी बाल विकास परियोजना अधिकारियों को दें। जिला पंचायत राज अधिकारी से कहा कि गोद लिए आंगनबाड़ी केंद्रों पर मैत्री शौचालय एवं स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करायें। जिलाधिकारी ने खंड विकास अधिकारियों से कहा कि जो आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण हो रहा है उन्हें तत्काल पूर्ण करायें। डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह से कहा कि समीक्षा कर काला चार्ट पेंट जो रामनगर, मऊ व कर्वी में नहीं हुआ, सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, खंड विकास अधिकारी तत्काल करायें।

उन्होंने कहा कि सभी बाल विकास परियोजना अधिकारी सुनिश्चित करें कि अगले माह पोषण ट्रैकर की फीडिंग पंचानवे प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए।

जिला कार्यक्रम अधिकारी बाल विकास मनोज कुमार से कहा कि बाल विकास परियोजना बार रिपोर्ट दें कि किन केंद्रों पर वजन मशीनें खराब हो गई हैं या नहीं है।

बैठक में सीडीओ अमृतपाल कौर, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, डीडीओ आरके त्रिपाठी, एसीएमओ डॉ एमके जतारिया, डीपीआरओ कुमार अमरेंद्र, जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, डीएसओ संजय मिश्रा आदि मौजूद रहे।

शिक्षकों ने बनाई आन्दोलन की रणनीति

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ दिनेश चंद्र शर्मा एवं प्रदेश कार्यकारिणी के निर्धारित कार्यक्रम अनुसार उप्र प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष व जिलाध्यक्ष अखिलेश पाण्डेय के आवाहन पर मानिकपुर ब्लॉक कार्य समिति ने बीआरसी भवन में पदाधिकारियों की बैठक हुई।

शुक्रवार को बैठक में शिक्षकों की पुरानी पेंशन, कैशलेस चिकित्सा जैसी महत्वपूर्ण 18 सूत्रीय मांगों की बाबत विस्तार से चर्चा हुई। 18 सूत्रीय मांगों का शिक्षकों के मध्य विभिन्न संचार माध्यमों से प्रचार करने के साथ संगठन की रणनीति अनुसार दस से 15 अगस्त के बीच मांगों की बाबत मऊ-मानिकपुर क्षेत्र विधायक को ज्ञापन दिया जायेगा। आंदोलन की अगली रणनीति पर विस्तार से चर्चा हुई।

बैठक में जिला संयुक्त मंत्री हरिशंकर त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष अशोक कुमार त्रिपाठी, ब्लॉक अध्यक्ष मानिकपुर विनय कुमार शुक्ला, ब्लॉक मंत्री श्रीपाल कबीर, ब्लॉक वरिष्ठ उपाध्यक्ष अभिषेक कुमार पांडेय, संघर्ष समिति ब्लॉक अध्यक्ष अमित सोनी, तहसील अध्यक्ष भगवानदीन मिश्र, अभिषेक तिवारी, शिव बोध पाण्डेय, सत्यप्रकाश तिवारी, मानवेन्द्र कोटार्य, कृष्ण कुमार सिंह, मकसूद अहमद, अरविंद शुक्ला, रमेश प्रसाद, सौरभ पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

ब्लाक प्रमुख का नहीं है कोई दोष?

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक ब्लाक प्रमुख के बारे में भी पीडिता ने कहा है कि वह पुलिस की भूमिका में नजर आ रहा था। ब्लाक प्रमुख ने कहा कि वह जनप्रतिनिधि होने के नाते पीडिता को समझाने थाने गये थे। उनका कोई दोष नहीं है। कोई भी जनप्रतिनिधि ऐसे मामले में थाने जाकर समझाने का प्रयास करता है। उन्होंने भी वही सब कुछ किया, जो करना चाहिए था।

मूल्य परामर्श दात्री परिषद के सांसद बने सदस्य

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। किसानों को उपज का लाभकारी मूल्य दिलाने एवं कृषि लागत एवं मूल्य आयोग भारत सरकार के चिन्हित कृषि उपजों के मूल्य निर्धारण की संस्तुति भेजने को उप्र शासन ने 17 जुलाई 1991 मूल्य परामर्श दात्री परिषद का पुनर्गठन किया है। इसी क्रम में राज्यपाल ने उप्र की बांदा लोकसभा क्षेत्र से सांसद आरके सिंह पटेल को परिषद में सदस्य नामित किया है।

शुक्रवार को सांसद आरके सिंह पटेल खुद एक किसान हैं। इस चयन से किसानों की मेहनत से पैदा फसल का अच्छा दाम सरकारी खरीद केंद्र में मिलेगा। भारत सरकार के चिन्हित स्थानों पर गेहूं-धान के साथ तिलहन व दलहन की भी

खरीद होती है। बिचैलियों से बचत और किसान का पैसा सीधे बैंक खाते में पारदर्शी ढंग से पहुंचता है। केंद्र सरकार ने किसानों की फसल के एमएसपी के निर्धारित दाम समय-समय पर बढ़ाए जाते हैं।

भारत सरकार एवं उप्र सरकार ने किसानों की उपज का लाभकारी मूल्य दिलाने एवं किसानों की आमदनी दोगुनी करने को दृढ़ संकल्पित है। किसानों को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने में सरकार काम कर रही है। किसानों के कृषि संसाधनों को 80 फीसदी तक अनुदान से किसानों को कृषि यंत्र व अच्छी गुणवत्ता के बीज कीटनाशक दिये जा रहे हैं। बंजर परती भूमि को अभियान चलाकर समतल कराकर कृषि योग्य बनाया जा रहा है। नहरों में पानी को टेल तक पहुंचाया जा रहा है, ताकि किसान समृद्धि और आत्मनिर्भर बन सके। सांसद आरके सिंह पटेल को मूल्य परामर्श दात्री परिषद का सदस्य नामित करने से समर्थकों व क्षेत्रवासियों तथा किसानों और पार्टी के लोगों में खुशी की लहर है। उन्होंने प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया है।

दलित की पट्टे की जमीन पर दबंगों ने किया कब्जा

पीडिता ने डीएम से लगाई गुहार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पहाड़ी थाना क्षेत्र के नांदी गांव की अनुसूचित जाति की धनपतिया पत्नी स्व हरीवा ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि नांदी गोकुलपुर तहसील कर्वी में कृषि योग्य पट्टा छह मई 1989 को हुआ था। खाता संख्या 00217 रकबा 0.6300 हे है। उक्त नंबर की भूमिधर है। अनपढ़ व बेवा/बेसहारा होने से भूमि की जानकारी कुछ दबंगों व लेखपाल की मिलीभगत से उसे नहीं हो पाई थी।

शुक्रवार को पीडिता ने बताया कि

गांव के ही दबंग वशिष्ट मुनि, व्यास मुनि, सुखदेव मुनि, शिवबाबू पुत्रगण रामसजीवन ब्राह्मण व अगस्त मुनि पुत्र रामप्रताप ब्राह्मण, केसरी नंदन पुत्र अगस्त मुनि ब्राह्मण, राजकुमार पुत्र व्यास मुनि त्रिपाठी, संतोष कुमार पुत्र सुखदेव, सत्यनारायण पुत्र सुखदेव मुनि, कमलेश कुमार पुत्र चिरंजुवा चमार, धीरज पुत्र छत्रपाल तथा राममिलन पुत्र भोंडा चमार निवासी नांदी थाना पहाड़ी आदि ने पीडिता की जमीन पर अवैध ढंग से कब्जा कर रहे हैं। पीडिता ने पता चलने पर दस मई 2023 को सभी लोगों से जमीन पर कब्जा करने से मना किया। उक्त लोगों ने उसे जातिसूचक शब्दों का प्रयोग कर गाली-गलौज किया था।

पीडिता ने जिम्मेदार अधिकारियों से कार्यवाही की मांग की थी। अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। पीडिता की जमीन को दबंगों के चंगुल से छुड़वाया जाये। पीड़िता ने कहा कि पति की मृत्यु बहुत पहले हो चुकी है। पट्टे की भूमि की उसे जानकारी नहीं थी। गत वर्ष रास्ते को लेकर विवाद होने पर उसे जानकारी हुई। पीड़िता ने जिलाधिकारी से गुहार लगाई है कि उसके साथ हो रहे अन्याय हो रोका जाये। दोषियों के खिलाफ कडी कार्यवाही की जाये।

गांजा समेत आरोपी दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की अगुवाई में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने दिनेश पाल पुत्र केदार पाल निवासी चिल्लीमल के कब्जे से एक किलो तीन सौ ग्राम गांजा समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, सिपाही अमित सिंह, बब्बू राजा शामिल रहे।

18 क्वार्टर शराब समेत एक गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में थानाध्यक्ष रैपुरा शैलेन्द्रचन्द्र पाण्डेय की अगुवाई में दरोगा रमेश यादव की टीम ने श्यामनारायण उर्फ बच्चा पुत्र मुकुंदीलाल निवासी गढ़ीकला पड़री मजरा मदना के कब्जे से 18 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा रमेश यादव, सिपाही राममूरत मिश्रा शामिल रहे।

एडीजी प्रयागराज के साथ एसपी ने किया पैदल गश्त

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर पुलिस महानिदेशक भानु भास्कर, आईजी प्रयागराज रेंज चंद्र प्रकाश व पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला ने मोहर्रम एवं श्रावण मास के मद्देनजर शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने की गरज से कर्वी शहर की मिश्रित आबादी क्षेत्र एवं भीड़भाड़ वाले स्थानों पर पैदल गश्त किया।

शुक्रवार को पुलिस टीमों ने क्षेत्रीय नागरिकों से वार्ता कर सुरक्षा का भरोसा दिया। उन्होंने त्योहार को सकुशल सम्पन्न कराने को सम्बंधित को दिशा-निर्देश दिए। पैदल गश्त दौरान अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी, क्षेत्राधिकारी प्रज्ञान अनुज मिश्र, क्षेत्राधिकारी नगर हर्ष पाण्डेय, क्षेत्राधिकारी लाइन्स शीतला प्रसाद पाण्डेय आदि पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

विधवा के साथ दुष्कर्म आरोपी को दस साल की सजा, जिला जज ने सुनाया निर्णय

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। घर के सामने रहने वाली विधवा महिला से कई महीनों तक यौन शोषण के मामले में दोष सिद्ध होने पर जिला जज ने आरोपी को दस वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। 15 हजार रूपए के जुमार्ना से भी दण्डित किया है।

शुक्रवार को जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी श्याम सुन्दर मिश्रा ने बताया कि कर्वी कोतवाली क्षेत्र की एक महिला ने दुष्कर्म के मामले की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पीडिता के साथ 21 जून 2021 को आरोपी धीरेन्द्र कुमार प्रजापति ने अर्धरात्रि को छत से आकर सोते समय दबोचकर जबरन दुष्कर्म किया था। कर्वी कोतवाली में शिकायत पर पुलिस ने समझौता करा दिया था। आरोपी ने शपथ पत्र में कहा था कि दोबारा ऐसी घटना नहीं करेगा। 18 अगस्त 2021 को रात्रि में फिर से आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया था। शोरगुल करने पर गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी थी। पीडिता के अनुसार उसने अपने घर में छोटी सी श्रृंगार सामग्री की दुकान रखी थी। आए दिन आरोपी दुकान और घर में आकर छेडखानी करता था। सात अक्टूबर 2021 को जब वह घर में सो रही थी आरोपी घर की बाउंड्री से कूदकर अन्दर आकर जबरियां दुष्कर्म कर पिटाई की थी। उसकी बेटियों का गला दबाने का प्रयास किया था। पीडिता ने कोतवाली प्रभारी को सूचना दी तो कोई कार्यवाही नहीं हुई। न्यायालय में पीडिता ने धारा 156(3) के तहत अभियोग पंजीकृत कराया। पुलिस ने धीरेन्द्र कुमार के खिलाफ मामला दर्जकर न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया। बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद जिला जज विष्णु कुमार शर्मा ने आरोपी को दोष सिद्ध करार दिया। धीरेन्द्र कुमार को दस वर्ष की सजा के साथ 15 हजार रूपए के जुमार्ना से दण्डित किया।

दुष्कर्म की शिकार छात्रा को दें न्याय, पूर्व डीडीसी सिद्धार्थ पाण्डेय ने की मांग

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। समाजवादी पार्टी युवजन सभा के राष्ट्रीय सदस्य प्रो इन्द्रभूषण प्रताप यादव व पूर्व जिला पंचायत सदस्य सिद्धार्थ पाण्डेय की अगुवाई में आदर्श इंटर कालेज मानिकपुर की छात्रा के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म मामले में राज्यपाल सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम मानिकपुर को सौंपा।

शुक्रवार को समाजवादी पार्टी युवजन सभा के राष्ट्रीय सदस्य प्रो इन्द्रभूषण प्रताप यादव व पूर्व जिला पंचायत सदस्य सिद्धार्थ पाण्डेय की अगुवाई में सपाइयों ने पीडित नाबालिग बेटी को न्याय देने की मांग को लेकर तहसील परिसर में नारेबाजी की। नारेबाजी के बाद राज्यपाल सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम मानिकपुर रामजन्म यादव को सौंपा। ज्ञापन में कहा कि आदर्श इंटर कालेज मानिकपुर में छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म करने वालों पर कानूनी कार्यवाही की जाये। कक्षा दस की छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म के आरोपी पकडे जायें। पीडिता को सरकार 25 लाख का मुआवजा दे। दोषियों को सजा मिलने तक पीडिता व परिजनों को सुरक्षा दी जाये। पीडिता को सुविधानुसार विद्यालय व परीक्षा दिलाने की सुविधा दी जाये। इस मौके पर सपा युवजन सभा के पंकज जायसवाल, सतीश द्विवेदी, मनु सिंह, पीयूष रजा, सामत खां, संजय पाण्डेय, उदित पाण्डेय, राकेश यादव आदि मौजूद रहे।

मासूम बालिकाओं के साथ घिनौनी हरकत करने वाले दुकानदार को 20 साल की सजा, एक लाख पांच हजार रुपये जुमार्ना की भी सजा स्पेशल जज ने सुनाई

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सात वर्षीय मासूम बालिकाओं के साथ अश्लील हरकतें और दुष्कर्म करने वाले दुकानदार को न्यायालय ने 20 वर्ष की सजा सुनाई है। एक लाख पांच हजार रूपए के जुमार्ना से भी दंडित किया है।

शुक्रवार को विशेष लोक अभियोजक तेज प्रताप सिंह ने बताया कि सात अक्टूबर 2020 को भरतकूप थाने में एक व्यक्ति ने रिपोर्ट लिखाई थी कि शाम पांच बजे उसकी सात वर्षीय बेटी हम उम्र की लडकी के साथ गोंडा गांव के समरजीत यादव पुत्र सन्ता की दुकान में समान लेने गई थी। दुकानदार समरजीत यादव ने दोनों बालिकाओं के साथ अश्लील हरकतें की। दोनों लडकियों ने घर आकर महिलाओं को जानकारी दी। मामले की रिपोर्ट दर्ज होने के बाद लडकियों के बयान के आधार पर दुष्कर्म की पुष्टि हुई थी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजने के बाद न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

पाकिस्तान में बरसात का कहर, 10 की मौत, नदी-नाले उफान पर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में मानसून की बरसात कहर बरपा रही है। पिछले पांच दिन से मूसलाधार पानी बरस रहा है। बाढ़ और भूस्खलन से हालात बेहद खराब हैं। इस प्राकृतिक आपदा में गुरुवार को कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। पहाड़ी इलाकों के नदी-नाले उफान पर हैं। गांव बाढ़ से घिरे हैं। शहरी इलाके जलमग्न हैं। देश भर में मिट्टी के अधिकांश घर नष्ट हो गए। पाकिस्तान के मौसम विज्ञान विभाग ने अगले तीन दिनों के लिए रेड अलर्ट जारी करते हुए कहा कि 30 जुलाई तक देश के ऊपरी और मध्य हिस्सों में जोरदार मानसून गतिविधि होने की संभावना है। इस समय रावी नदी और सतलज नदी के तटीय इलाकों में पानी भर गया है। इन नदियों पर बने तीन बांध लबालब हैं।

अफगानिस्तान में एक हफ्ते में बाढ़ से 47 लोगों की मौत

काबुल, 28 जुलाई (हि.स.)। अफगानिस्तान में बरसात से नदी-नाले उफान पर हैं। कई जगह बाढ़ आ गई है। पिछले एक हफ्ते में बाढ़ से कम से कम 47 लोगों की मौत हो गई है। 74 अन्य लोग घायल हैं। पानी के सैलाब में 41 लोग बह गए। उनका अब तक कुछ पता नहीं है। तालिबान के नेतृत्व वाले प्राकृतिक आपदा प्रबंधन राज्य मंत्रालय के प्रवक्ता शफीउल्लाह रहीमी ने यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि मैदान वर्दक, काबुल, कुनार, पाकिता, खोस्त, नूरिस्तान, नंगरहार, गजनी, पक्तिका और हेलमंद में हाल ही में आई बाढ़ के कारण यह जनहानि हुई है। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के प्रांतीय निदेशक फैजुल्लाह जलाली स्टानिकजई के अनुसार, वारदाक प्रांत में सबसे अधिक 32 लोगों की मौत हुई है। 500 घर क्षतिग्रस्त हो गए। इसके अलावा 250 मवेशियों की भी मौत हो गई।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर एक और मुकदमा

वाशिंगटन। अमेरिकी के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर एक और मुकदमा दर्ज किया गया है। इसमें आरोप लगाया गया है कि ट्रंप ने गोपनीय दस्तावेजों की जांच में बाधा डालने के लिए फ्लोरिडा में मौजूद अपने आवास मार-ए-लागो में निगरानी के लिए लगाए गए सीसीटीवी के फुटेज को डिलीट करा दिया। संघीय अभियोजक ने ट्रंप के खिलाफ यह मुकदमा कोर्ट में दाखिल करवाया गया है। उल्लेखनीय है कि ट्रंप के एक प्रतिनिधि ने दिसंबर 2021 में राष्ट्रीय अभिलेखागार को बताया था कि उनके आवास मार-ए-लागो में राष्ट्रपति से संबंधित कई रिकॉर्ड पाए गए। प्रेसिडेंशियल रिकॉर्ड्स एक्ट के अनुसार, व्हाइट हाउस के दस्तावेज अमेरिकी सरकार की संपत्ति होते हैं। इनको वहीं संरक्षित किया जाना होता है। खास बातय है कि जनवरी 2022 में राष्ट्रीय अभिलेखागार ने ट्रंप के फ्लोरिडा घर से गोपनीय दस्तावेजों के 15 डिब्बे बरामद किए थे। अगस्त 2022 में मार-ए-लागो में अमेरिकी जांच एजेंसी ने कुल 11,000 दस्तावेजों वाले 33 से अधिक बक्से और कंटेनरों को जब्त किया था। इनमें 100 वर्गीकृत दस्तावेज शामिल थे।

सेमी कंडक्टर के क्षेत्र में भारत बनेगा पावरहाउस: अजीत मिनोचा

गांधीनगर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को गांधीनगर में महात्मा मंदिर में सेमीकॉन इंडिया 2023 का उद्घाटन किया। 'भारत के सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र का उत्प्रेरण' विषयक सम्मेलन भारत की सेमी कंडक्टर रणनीति और नीति को प्रदर्शित करता है, जो भारत को सेमी कंडक्टर डिजाइन, विनिर्माण और प्रौद्योगिकी विकास के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाने की परिकल्पना है। इस मौके पर उद्योग जगत के दिग्गजों ने विचार व्यक्त किये। सेमी के अध्यक्ष और सीईओ अजीत मिनोचा ने कहा कि भारत के इतिहास में पहली बार, भू-राजनीति, स्थानीय राजनीति और निजी गुप्त क्षमताएं भारत को सेमी कंडक्टर विनिर्माण में एक प्लेयर बनने के पक्ष में जुट गई हैं। उन्होंने कहा कि माइक्रोन द्वारा किया गया निवेश भारत में इतिहास बना रहा है जो दूसरों के अनुसरण के लिए मंच तैयार करेगा। सेमी कंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र को समझने वाला नेतृत्व मौजूदा प्रणाली को अलग बनाता है। भारत अगला पावर हाउस बन जाएगा। ईवीपी और सीटीओ एएमडी के मार्क पेपरमास्टर ने घोषणा की कि एएमडी अगले 5 वर्षों में लगभग 400 मिलियन डॉलर का निवेश करेगा। एएमडी अपनी अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं को बढ़ाएगा। उन्होंने कहा कि हम बेंगलुरु में अपना सबसे बड़ा डिजाइन सेंटर स्थापित करेंगे।

सेमी कंडक्टर प्रोडक्ट ग्रुप एप्लाइड मैटेरियल्स के अध्यक्ष डॉ. प्रभु राजा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि के साथ, भारत वैश्विक सेमी कंडक्टर उद्योग में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि यह भारत के चमकने का समय है।

कोई भी कंपनी या देश अकेले इस क्षेत्र की चुनौतियों से नहीं निपट सकता। इस क्षेत्र में सहयोगात्मक भागीदारी का समय आ गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह नया सहयोगी मॉडल हमें इस क्षेत्र में उत्प्रेरित कर सकता है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

हिजाब नहीं पहनने पर धमकी मिलने के बाद ईरानी शतरंज खिलाड़ी ने ली स्पेन की नागरिकता

मैड्रिड। हिजाब नहीं पहनने पर धमकी मिलने के बाद ईरानी महिला शतरंज खिलाड़ी सारा खादेम के नाम से मशहूर सारा सादत खादेमलशरीह ने स्पेन की नागरिकता ले ली है। यह जानकारी स्पेन सरकार ने दी है। ज्ञात रहे कि दिसंबर में सारा ने कजाकिस्तान में एक प्रतियोगिता में बिना हिजाब के भाग लेने पर ईरान सरकार ने विरोध किया था। उस दौरान विरोध से बचने के लिए सारा खादेम जनवरी में स्पेन चली गई थी। हाल ही में सारा खादेम को स्पेनिश नागरिकता प्रदान की गई है। इस बात की जानकारी स्पेन सरकार ने 27 जुलाई (गुरुवार) को दी। कजाकिस्तान में आयोजित फिडे वर्ल्ड रैपिड और ब्लिट्ज शतरंज चैंपियनशिप में बिना हिजाब के बिना हिस्सा

लिया, जो ईरान के सख्त इस्लामिक ड्रेस कोड के तहत अनिवार्य है। सारा खादेम के ऐसा करने के कारण ईरान में उसके घर पर उसके खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी किया गया था। ईरान में अनिवार्य हिजाब पहनने को लागू करने वाले कानून से अशांति के दौरान सितंबर के मध्य में 22 वर्षीय ईरानी-कुर्दिश महिला महसा अमिनी की नैतिकता पुलिस की हिरासत में मृत्यु हो गई। 26 वर्षीय सारा ने बताया कि उसे अपने देश के लिपिक नेतृत्व के खिलाफ विरोध आंदोलन के समर्थन में अपने कर्मों पर कोई पछतावा नहीं है। वहीं, स्पेन के आधिकारिक राजपत्र में कहा गया है कि कैबिनेट ने 25 जुलाई (मंगलवार) को खादेम को उसके मामले की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नागरिकता देने को मंजूरी दे दी।

जम्मू कश्मीर में आतंक फैलाने को अलकायदा बना रहा नया आतंकी संगठन, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की रिपोर्ट में खुलासा

संयुक्त राष्ट्र। जम्मू कश्मीर को निशाना बनाने के लिए आतंकी संगठन अलकायदा तैयारी में कर रहा है। इसके लिए वह अफगान तालिबान व अन्य संगठनों के साथ हाथ मिला रहा है। इसका खुलासा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक रिपोर्ट में हुआ है। अल-कायदा बांग्लादेश और म्यांमार में अपने अभियान का विस्तार करने के लिए क्षेत्रीय सहयोगी को आकार दे रहा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एनालिटिकल सपोर्ट एंड ए सैंक्शंस मॉनिटरिंग टीम द्वारा अल-कायदा और इस्लामिक स्टेट के ग्लोबल ऑपरेशन पर रिपोर्ट जारी की गई है। इसमें कहा गया है कि अल-कायदा के अफगानिस्तान में अनुमानित 400 लड़ाके हैं, जबकि उसका सहयोगी, भारतीय उपमहाद्वीप में अल-कायदा (एक्यूआईएस) में लगभग 200 लड़ाके हैं। एक्यूआईएस का नेतृत्व ओसामा महमूद कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के एक अनाम सदस्य देश के आकलन का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि अल-

कायदा जम्मू-कश्मीर, बांग्लादेश और म्यांमार मेंअपने अभियानों को फैलाने के लिए एक्यूआईएस को आकार दे रहा है। इस सदस्य देश नेयह भी बताया कि एक्यूआईएस के कुछ सीमित लड़ाके या तो आईएसआईएल-के के साथ जुड़ने या सहयोग करने के लिए तैयार हैं। रिपोर्ट में अफगानिस्तान में मौजूद ग्लोबल आतंकी नेटवर्क के इस्लामिक स्टेट-खुरासान प्रांत चैप्टर का भी जिक्र किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के एक अन्य सदस्य देश ने एक्यूआईएस के तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के साथ विलय की संभावना की ओर इशारा किया है। एक्यूआईएस अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे से उत्साहित है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस सदस्य देश ने आकलन किया है कि एक्यूआईएस पाकिस्तान के भीतर बढ़ते हमलों के लिए टीटीपी को मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है। एक्यूआईएस बनानेकी घोषणा अल-कायदा के पूर्वप्रमुख अयमान अल-जवाहिरी नेसितंबर 2014 में की थी। पाकिस्तान स्थित असीम उमर इस आतंकी संगठन का मूल नेता था। जब अफगानिस्तान में अमेरिकी सैन्य अभियान के दौरान उमर मारा गया था तब ओसामा महमूद 2019 में एक्यूआईएस का प्रमुख बन गया। ओसामा महमूद को पाकिस्तानी नागरिक माना जाता है। क्षेत्र में इस्लामिक स्टेट-खुरासान प्रांत के साथ एक्यूआईएस के सहयोग की अब तक कोई रिपोर्ट नहीं है।

अमेरिका में जल्द हो सकती है दीपावली की छुट्टी, ग्रेस मेंग ने किया दिवाली दिवस बिल पेश

वाशिंगटन: दिवाली एक ऐसा त्योहार है, जिसे देश ही नहीं दुनियाभर में धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसे में, अमेरिका की सांसद ग्रेस मेंग ने दिवाली वाले दिन संघीय अवकाश घोषित किए जाने की मांग की है। उनका कहना है कि हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन सहित विभिन्न धर्मों के लाखों अमेरिकी दिवाली मनाते हैं। इसलिए इस दिन अवकाश घोषित किया जाना चाहिए।

यह बिल किया पेश वकील से नेता बनी मेंग ने देश में दिवाली वाले दिन संघीय अवकाश घोषित किए जाने के लिए एक बार फिर अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में दिवाली दिवस बिल पेश किया है। उन्होंने कहा कि मई में पेश किए गए विधेयक को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। कुछ भी नकारात्मक नहीं सुना है। हमारे पास हर हफ्ते हस्ताक्षर करने वाले सदस्य होते हैं और इसलिए हम इसके बारे में बात करते रहने के लिए उत्साहित हैं। उम्मीद है कि हम इसे पारित करने में सक्षम होंगे।

त्योहारों की अहमियत समझने के लिए जरूरी मेंग ने कहा कि यह सिर्फ एक दिन की छुट्टी के बारे में नहीं है। बल्कि जो लोग दिवाली मनाते हैं, उनके साथ अन्य लोग भी शामिल होकर इस त्योहार की अहमियत समझ सकेंगे। न्यूयॉर्क शहर के क्वींस में पली-बढ़ी मेंग ने कहा कि वह हमेशा यह सुनिश्चित करना चाहती थीं कि सभी समुदायों के त्योहार पर सरकारी छुट्टियां हों। उन्होंने कहा कि आशा है कि दिवाली दिवस बिल जल्द पास हो जाए। अरबों लोग मनाते हैं दिवाली

47 वर्षीय सांसद ने कहा कि एक एशियाई अमेरिकी के रूप में मेरे लिए दिवाली का त्योहार महत्वपूर्ण है। हजारों न्यूयॉर्क वासियों और दुनिया भर के अरबों लोगों द्वारा दिवाली मनाई जाती है। इस दिन यह सुनिश्चित हो कि हमें अवकाश मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि दिवाली वाले दिन स्कूल की छुट्टी हो, इसके लिए हम करीब 10 वर्षों से अधिक समय से लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, भारतीय अमेरिकियों ने अमेरिका में बहुत योगदान दिया है। भारतीय अमेरिकी इस देश में सबसे बड़ी एशियाई अमेरिकी आबादी में से एक हैं। सांसद ने कहा कि उन्होंने हमारी संस्कृति से लेकर शिक्षा जगत और हमारी अर्थव्यवस्था तक में बहुत योगदान दिया है। इसलिए हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम उनके महत्वपूर्ण योगदान और छुट्टियों को पहचानें जो भारतीय अमेरिकी मनाते हैं।

पाकिस्तान: देश की सुरक्षा व सेना से जुड़ी जानकारी के खुलासे पर पांच साल जेल, सीनेट से विधेयक पास

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में अब देश की सुरक्षा व सेना से जुड़ी जानकारी का खुलासा करने वाले व्यक्ति के लिए पांच साल तक जेल का प्रावधान कर दिया गया है। इस आशय का विधेयक पाकिस्तान की सीनेट ने पारित कर दिया। पाकिस्तान की मौजूदा सरकार इस समय गुप्त दस्तावेज के मुद्दे पर पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर मुकदमा चलाने के प्रयास कर रही है। इसी बीच पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने सीनेच के समक्ष पाकिस्तान सेना अधिनियम, 1952 में संशोधन के लिए एक विधेयक पेश किया। सीनेट ने इस विधेयक को पास कर दिया। विधेयक में कहा गया है कि जो व्यक्ति पाकिस्तान की सुरक्षा और लाभ के लिए आधिकारिक क्षमता में प्राप्त जानकारी का अनधिकृत खुलासा करेगा उसे पांच साल तक के कठोर कारावास की सजा दी जाएगी। इसमें कहा गया है कि सेना प्रमुख या अधिकृत अधिकारी की अनुमति से खुलासा करने वाले व्यक्ति को दंडित नहीं किया जाएगा। विधेयक में यह भी कहा गया है कि जो कोई भी देश और पाकिस्तानी सेना के हितों के खिलाफ जानकारी का खुलासा करेगा, उसके खिलाफ आधिकारिक गोपनीयता

अधिनियम और सेना अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा इस विधेयक में प्रावधान किया गया है कि कोई व्यक्ति अपनी सेवानिवृत्ति, त्यागपत्र या सेवा से बर्खास्तगी के दो साल बाद तक किसी भी राजनीतिक गतिविधि में भाग नहीं लेगा। न ही संवेदनशील ड्यूटी पर तैनात किसी व्यक्ति को अपनी सेवा के बाद पांच साल तक राजनीतिक गतिविधि में शामिल होने की अनुमति होगी। कोई भी व्यक्ति राजनीतिक गतिविधियों को छोड़कर अन्य धाराओं के उल्लंघन का दोषी पाया जाता है, तो उसे दो साल तक की सजा हो सकती है। नए कानून के मुताबिक सेना अधिनियम के किसी इलेक्ट्रॉनिक अपराध में शामिल किसी व्यक्ति का मकदस यदि पाकिस्तान सेना को बदनाम करना है, तो उसके खिलाफ पाकिस्तान इलेक्ट्रॉनिक अपराध अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति सशस्त्र बलों के खिलाफ नफरत फैलाता या उन्हें बदनाम करता पाया गया तो उसे जुर्माना और दो साल तक की कैद हो सकती है। सेना अधिनियम में संशोधन के विधेयक के अलावा, छावनी अधिनियम, 1924 और रक्षा आवास प्राधिकरण इस्लामाबाद अधिनियम, 2013 में संशोधन के लिए दो अन्य विधेयक भी सीनेट द्वारा पारित किए गए।

उत्तर कोरिया के तानाशाह ने रूसी रक्षा मंत्री को दिखाया हथियारों का जखीरा

प्योंगयांग। यूक्रेन पर रूसी हमले के बीच उत्तर कोरिया दौरे पर पहुंचे रूस के रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू को उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने हथियारों का जखीरा दिखाया। इन हथियारों में वे अंतरमहाद्वीपीय मिसाइलें भी शामिल हैं, जिनकी मार करने की क्षमता अमेरिका तक है। रूस के रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू उत्तर कोरिया पहुंचे तो स्वयं उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग उन ने उन्हें उत्तर कोरिया की सैन्य क्षमता से परिचित कराया। उन्होंने रूसी रक्षा मंत्री को अपने ड्रोन भी दिखाए। तस्वीरों को देखकर लग रहा है कि उत्तर कोरिया ने अमेरिका के ग्लोबल

हॉक और रीपर ड्रोन की नकल तैयार करने की कोशिश की है। किम जोंग उन, रूसी रक्षा मंत्री को एक हथियार प्रदर्शनी में भी ले गए, जहां उत्तर कोरिया के कुछ नए हथियारों को रखा गया था। किम जोंग उन और सर्गेई शोइगू ने सैन्य मुद्दों और क्षेत्रीय सुरक्षा माहौल पर चर्चा भी की। बातचीत के दौरान दोनों नेताओं ने 'राष्ट्रीय रक्षा तथा क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के माहौल को लेकर आपसी चिंता के मामलों' पर सहमति व्यक्त की। किम ने शोइगू को देश की सैन्य क्षमताओं का विस्तार करने की राष्ट्रीय योजनाओं के बारे में जानकारी दी। रूस के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि शोइगू ने उत्तर कोरिया के रक्षा मंत्री कांग सुन नाम के साथ भी बातचीत की, जिसका उद्देश्य 'दोनों देशों के रक्षा विभागों के बीच सहयोग को मजबूत करना' था।

कंगाल पाकिस्तान को सऊदी अरब का सहारा, दस अरब डॉलर से मिलकर लगाएंगे रिफाइनरी

इस्लामाबाद। भीषण आर्थिक संकट के चलते कंगाली के कगार पर पहुंचे पाकिस्तान को सऊदी अरब का सहारा मिला है। दोनों देशों ने मिलकर दस अरब डॉलर से रिफाइनरी लगाने का फैसला किया है। पाकिस्तान इस समय भीषण आर्थिक संकट झेल रहा है, ऐसे में मदद को सऊदी अरब सामने आया है। तय हुआ है कि पाकिस्तान और सऊदी अरब मिलकर ग्वादर में विशाल रिफाइनरी लगाएंगे। इस परियोजना पर 10 अरब डॉलर खर्च होंगे। इस रिफाइनरी के लिए पाकिस्तान की पांच सरकारी कंपनियां और सऊदी अरब की चर्चित तेल कंपनी अरमाको निवेश करेगी। पाकिस्तान इस परियोजना में 70 फीसदी पैसा लगाएगा और सऊदी अरब की कंपनी 3 अरब डॉलर खर्च करेगी। इस रिफाइनरी में हर दिन चार लाख बैरल तेल साफ करने की क्षमता होगी। दरअसल, पाकिस्तान पहले चाहता था कि सऊदी अरब पूरे 10 अरब डॉलर अकेले निवेश करे, लेकिन उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया। पाकिस्तान की आर्थिक हालत बहुत ही खराब होने के चलते सऊदी अरब पहले ही उसे काफी लोन दे चुका है। शहबाज शरीफ से लेकर आर्मी चीफ जनरल असीम मुनीर तक सऊदी प्रिंस से गुहार लगा चुके हैं। इसके बाद भी सऊदी अरब ने इस परियोजना के लिए पूरा धन खर्च करने से इनकार कर दिया है। सऊदी अरब के इस रुख के बाद आखिरकार शहबाज सरकार को रिफाइनरी में 70 फीसदी पैसा लगाने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इससे पहले सऊदी प्रिंस ने साल 2019 में यात्रा के दौरान 20 अरब डॉलर के निवेश पैकेज का ऐलान किया था, जिसमें 10 अरब डॉलर रिफाइनरी पर खर्च किया जाना था। हालांकि, अब रिश्ते खराब होने के बाद वह केवल 3 अरब डॉलर का ही निवेश कर रहा है।

नेपाल में सोने की तस्करी में चीनी नागरिक ज़िक्कान लिन के कनेक्शन की जांच तेज

काठमांडू। नेपाल में सोने की तस्करी में शामिल चीनी नागरिक ज़िक्कान लिन के कनेक्शन की जांच तेज हो गई है। राजस्व जांच विभाग ने चीनी नागरिक के कार्यालय और आवास पर छापेमारी की। विभाग ने काठमांडू के उस घर पर छापा मारा, जहां जिकवांग दो चीनी नागरिकों के साथ रह रहा था। जांच टीम ने घर में मौजूद इलेक्ट्रॉनिक सामग्री और दस्तावेज कब्जे में ले लिए हैं। राजस्व जांच विभाग ने बुधवार को भी ब्रेक शू के उस गोदाम पर छापेमारी की थी, जहां जिकवांग सोने का प्रबंधन करता था। वहां से 1162 ब्रेक शू बरामद किये गये हैं। ब्रेक शूज़ के अंदर सोना छिपाकर लाया गया था।हालांकि, किराए के गोदाम में ब्रेक शू तो मिले, लेकिन सोना नहीं मिला। सोना गलाने के उपकरण और तराजू मिले हैं। नेपाल के त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 19 जुलाई को 100 किलोग्राम सोना बरामद किया गया था। 20 जुलाई को आव्रजन विभाग ने चीनी नागरिक को उस वक्त पकड़ लिया, जब वह चीन भागने की फिराक में था। सोने की तस्करी में अब तक 17 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। कुछ व्यापारियों की जांच की गई है। इस घटना को लेकर नेपाल के प्रमुख नेताओं के बीच आरोप-प्रत्यारोप लगाए गए हैं।